



Malaika Arora On How She Protects Her Joy Amid Public Scrutiny...

नौकरशाही



डॉ. ब्रजेश मिश्र

वनांचल की नौकरशाही इन दिनों व्यवस्था में बदलाव के दौर से गुजर रही है। आलोचक कहते हैं, यह सरकारी सिस्टम कम और रियलिटी शो ज्यादा लग रही है। कौन किस कुर्सी पर बैठेगा, इसका फैसला कभी फाइल करती थी, कभी फार्मूला और अब कभी-कभी सिर्फ एक फोटो। आखिर क्या चल रहा है अंदरखाने, जामें द फोटोन न्यूज के एक्जीक्यूटिव एडिटर की कलम से।

गुरु उस दिन असामान्य रूप से फुर्सत में थे। चाय की चुस्की के साथ वनांचल की कहानी चल पड़ी। धीरे-धीरे मामला फेरबदल के पोस्टमॉर्टम तक पहुंच गया। साहिबानों की किस्मत ताश के पत्तों की तरह फेंटी गई थी। कोई सीधे इक्का बन गया था, कोई हाथ में आया जोकर। गुरु बोले, 'बाबू, कुर्सी तक पहुंचने के लिए योग्यता जरूरी है, लेकिन सिर्फ योग्यता के भरोसे रहने वाले आजकल अक्सर खूंटो पर टंगे दिखते हैं। सिस्टम में बने रहने के लिए ग्रह-नक्षत्र, नेटवर्क, नजदीकियां और नैरेटिव, सबका अलग-अलग वेटेज है।' पूछा, 'इस बार सबसे बड़ा फैक्टर क्या रहा?' गुरु मुस्कराए, बोले- 'फोटो... सिर्फ फोटो।' अब कहानी बाबागरी की। चर्चा है कि जनप्रतिनिधि ने सोशल मीडिया पर बड़ी मासूमियत से एक तस्वीर डाल दी। तस्वीर में ऐसा कुछ दिख गया, जो शायद कैमरे से ज्यादा किसी की नजरों में कैद हो गया। फिर क्या था, रातों-रात नोटशीटों ने करवट बदली, फाइलों ने दौड़ लगाई और सुबह होते-होते साहब की कुर्सी किसी और के नाम हो गई। गुरु ने



ठहाका लगाया, बोले, 'आजकल सिस्टम में एसीआर बाद में, पहले एचडी फोटो देखी जाती है। परफॉर्मेंस से ज्यादा पिकसल की कीमत है।' इसके बाद गुरु ने एक गढ़ का किस्सा छेड़ दिया। बताया, 'वहां जिस हाकिम को भेजा गया था, उनका मन राजधानी में अटका था। व्यवस्थित चैंबर में ब्लैक कॉफी

फोटो वाली फ्रेमिंग

ज्यादा याद आ रही थी। फिर ऐसा ताना-बाना बुना गया कि तबादला हो गया। बदले में पुराना ठिकाना वापस मिल गया।' अब प्रशासनिक गलियारों में बहस चल रही है कि यह बदलाव था या 'होमकमिंग'। गुरु का मूढ़ बन चुका था। बोले, 'सबसे भाग्यशाली एक युवा अधिकारी रहे, जो कतार में कहीं पीछे खड़े थे। पूर्व की व्यवस्था में जिस कुर्सी पर उनका नाम लगभग तय था, वहां आखिरी समय में सीनियर साहब विराजमान हो गए। कहते हैं राजनीति और नौकरशाही में एक नियम स्थायी है- एक कुर्सी छूटेंगी तो दूसरी खाली होगी। सो, खाली हुई कुर्सी पर साहब की सीट ऐसे कन्फर्म हुई जैसे रेलवे का वेटिंग टिकट।' कुछ पूछ पाता, उससे पहले गुरु ने नया गोला दाग दिया। कहा, अब सुनो इस सीजन की सबसे चर्चित कथा 'टंकण त्रुटि'। इतना कहते ही गुरु फिर हंस पड़े। बोले- हालिया फरमान में जो लिखा गया था, कुछ

घंटे बाद उसे 'टंकण त्रुटि' बताकर बदल दिया गया। नौकरशाही के जानकारों का दावा है कि टंकण त्रुटि एक ऐसा चमत्कारी शब्द है, जो भाग्य, पद और प्रभार, तीनों बदलने की क्षमता रखता है। गुरु बोले, 'बाबू, यहां कलम से ज्यादा ताकत करेक्शन में होती है। पहले आदेश निकलता है, फिर उसका अर्थ निकलता है और अंत में उसका संशोधन'। चर्चा है कि तीन साहिबानों की जिम्मेदारियां इसी 'त्रुटि' की भेंट चढ़ गईं। अब सवाल यह है कि गलती टाइप करने वाले की थी या सोचने वाले की? इन सबके बीच असली दर्द की कहानी कहीं और थी। टंकण सुधार की इस सुनामी में एक मोहरतमा की कुर्सी भी बह गई। बताया जाता है कि तब से वह हर मिलने वाले को अपनी व्यथा-कथा सुना रही हैं। कोई सहानुभूति जता रहा है, कोई सलाह दे रहा है और कुछ लोग चुपचाप मनोरंजन का आनंद ले रहे हैं। हालांकि असल चर्चा कोई नहीं कर

रहा कि मैडम का तेवर ही सबसे बड़ी मुसीबत है। इस पूरे घटनाक्रम के बाद वनांचल की नौकरशाही में नया प्रोटोकॉल लागू हो गया है। अब अफसर फाइल पर दस्तखत करने से अधिक सावधानी फोटो खिंचवाने में बरत रहे हैं। कौन फ्रेम में है, कौन फ्रेम से बाहर, किसके साथ खड़े हैं, किसकी तरफ देख रहे? सबका राजनीतिक और प्रशासनिक अर्थ निकाला जा रहा है। गुरु आखिर में उठते-उठते बस इतना कह गए, 'बाबू, हमारे सिस्टम में फाइलें कम और संकेत ज्यादा चलते हैं। कभी एक नोटशीट कुर्सी हिलाती थी, अब एक फोटो वही काम कर देती है। इसलिए मुस्कराए, फोटो खिंचवाइए और ध्यान रखिए... कहीं एक मुस्कान स्थान परिवर्तन का कारण न बन जाए।' गुरु उठकर चले गए। सो, हम भी निकल पड़े। कहानी पूरी हो चुकी थी। अब यह सिर्फ खबर नहीं, नई फिल्म की पटकथा बननी थी।

|        |          |
|--------|----------|
| SARAFI |          |
| सोना   | : 14,545 |
| चांदी  | : 290.00 |

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

एशियाई खेलों के चयन ट्रायल के सेमीफाइनल में हार्री विनेश फोगाट

NEW DELHI : विनेश फोगाट एशियाई खेलों के चयन ट्रायल में महिलाओं के 53 किलोग्राम के सेमीफाइनल में मीनाक्षी गोयत से 4.6 से हारकर बाहर हो गईं। इस हार के साथ ही विनेश की वापसी की और जापान के आइची नागोया में इस साल के आखिर में होने वाले एशियाई खेलों में जगह बनाने की उम्मीदें भी ध्वस्त हो गईं। इससे पहले विनेश ने अपने बरसों के अनुभव को निंकोते हुए बेहद आक्रामक शिको को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई थी।

अवैध प्रवेश मामले में अमेरिकी नागरिक को ढाई साल की सजा

KISHANGANJ : भारत-नेपाल अंतरराष्ट्रीय सीमा के रास्ते अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने के मामले में किशनगंज की एक अदालत ने एक अमेरिकी नागरिक को दोषी करार देते हुए दो वर्ष छह माह के कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने दोषी पर 10 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है। जुर्माने की राशि जमा नहीं करने की स्थिति में उसे एक माह का अतिरिक्त साधारण कारावास भुगतना होगा। जिला एवं अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश-प्रथम सुरेश प्रसाद सिंह की अदालत ने विदेशी अधिनियम के तहत दोषी पाए गए शफीउल आलम को यह सजा सुनाई। अदालत में प्रस्तुत अभिलेखों के अनुसार शफीउल आलम अमेरिका के न्यू जर्सी राज्य के अटलांटा सिटी स्थित नॉर्थ हार्टफोर्ड एवेन्यू का निवासी है।

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने सही समय पर की कार्रवाई पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के 9 एजेंट अरेस्ट

NEW DELHI @ PTI : शनिवार को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने सही समय पर कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी इंटर सर्विस इंटेलिजेंस (आईएसआई) और दाऊद इब्राहिम के अंडरवर्ल्ड नेटवर्क से जुड़े 9 लोगों को अरेस्ट कर लिया। इनके पास से हथियार, ग्रेनेड और विस्फोटक मिले हैं। पुलिस ने बताया कि ये लोग बड़े आतंकी हमले की साजिश रच रहे थे। इनके निशाने पर दिल्ली, मुंबई के प्रमुख धार्मिक स्थल, सरकारी इमारतें, मंत्रालय और सुरक्षाबल थे। जांच के मुताबिक, यह आतंकी मांड्यूल लंबे समय से तैयार किया जा रहा था। आरोपी पाकिस्तान स्थित हैंडलर्स से भी संपर्क में थे।

पुलिस सूत्रों के हवाले से बताया गया कि आरोपी दिल्ली, मुंबई और पंजाब के हैं। इन्हें कुछ

धार्मिक स्थलों और सरकारी इमारतों पर आतंकवादी हमले की साजिश नाकाम मास्टरमाइंड और भारतीय मददगारों की तलाश जारी, हथियार, ग्रेनेड व विस्फोटक बरामद

लंबे समय से तैयार किया जा रहा था

» आतंकी मांड्यूल, पाकिस्तान स्थित हैंडलर्स से भी संपर्क में थे आरोपी

दिल्ली, मुंबई और पंजाब के हैं आरोपी, कुछ नेपाली नागरिक भी शामिल

लाल किले के पास हुआ था ब्लास्ट

दिल्ली में पिछले साल आतंकीयों ने लाल किले के पास 10 नवंबर को कार ब्लास्ट किया था। धमाके में 11 लोगों की मौत हुई थी और कई घायल हुए थे। इसके पीछे अलकायदा इन इंडियन सबकॉन्टिनेंट से जुड़े मांड्यूल का हाथ था।

नेपाली नागरिक भी शामिल हैं। सुरक्षा एजेंसियां अब मास्टरमाइंड और स्थानीय मददगारों की तलाश कर रही हैं। दिल्ली पुलिस अब इस मांड्यूल के फंडिंग स्रोतों, भर्ती प्रक्रिया और

लॉजिस्टिक सपोर्ट सिस्टम की जांच कर रही है। साथ ही उन स्थानीय मददगारों और विदेशी साजिश में शामिल थे।

टीएमसी नेता अभिषेक बनर्जी पर हमला पूर्व सीएम ममता बनर्जी ने कहा- हत्यारे बन गए शासक



■ फेंके गए अंडे और जूते-चप्पल की गई पत्थरबाजी, हेलमेट पहनकर बचाई जान

'फर्जी हस्ताक्षर' मामले में सीआईडी ने भेजा समन शनिवार को पश्चिम बंगाल के अपराध जांच विभाग (सीआईडी) ने तुणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी को नोटिस जारी करके जांच एजेंसी के समक्ष पेश होने के लिए कहा है। यह नोटिस उन्हें विधानसभा सचिवालय को सौंपे गए उस पत्र में पार्टी विधायकों के जाली हस्ताक्षरों के कथित इस्तेमाल की जांच के सिलसिले में दिया गया है, जिसमें शोभनदेब चट्टोपाध्याय को नेता प्रतिपक्ष के रूप में समर्थन दिया गया था। सीआईडी सूत्रों के अनुसार, यह नोटिस उन्हें सोमवार दोपहर एजेंसी के भवानी भवन मुख्यालय में पहुंचाए के लिए पेश होने का निर्देश देने वाला समन है।

हार्बर के सांसद अभिषेक बनर्जी को दक्षिण 24 परगना के सोनारपुर में जनविरोध का सामना करना पड़ा। उन पर पत्थरबाजी की गई, अंडे तथा जूते-चप्पल फेंके गए।

जान बचाने के लिए उन्हें हेलमेट पहनकर निकलना पड़ा। इस घटना पर पूर्व मुख्यमंत्री एवं टीएमसी सुप्रिीम ममता बनर्जी ने कहा - शासक हत्यारे बन गए।

डीके शिवकुमार होंगे कर्नाटक के अगले सीएम, 3 जून को लेंगे शपथ

AGENCY BENGALURU : शनिवार को कांग्रेस की कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष डीके शिवकुमार को पार्टी विधायक दल का नेता चुन लिया गया, जिससे उनके राज्य के अगले मुख्यमंत्री बनने का मार्ग प्रशस्त हो गया। कांग्रेस की कर्नाटक इकाई ने शिवकुमार के विधायक दल का नेता चुने जाने की घोषणा करते हुए एक बयान में कहा कि सिद्धरमैया ने शिवकुमार का नाम शीर्ष पद के लिए प्रस्तावित किया, जी परमेश्वर ने प्रस्ताव को समर्थन दिया और बैठक में सर्वसम्मति से इसे मंजूरी दे दी गई। नेता चुने जाने के बाद पूर्व सीएम सिद्धरमैया के साथ डीके शिवाकुमार ने राज्यपाल तथारचंद गहलोत से मुलाकात की और नई सरकार बनाने का दावा पेश किया। राज्यपाल ने उन्हें सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। शिवकुमार का नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण समारोह तीन जून को यहां लोकभवन के ग्लास हाउस में होगा।

अद्भुत नजारा

घने जंगलों और हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा यह इलाका बना सैलानियों की पसंद

बुरुडीह डैम में पर्यटकों के लिए लक्षद्वीप जैसा आनंद

RAJESH CHOUBEY @ JSR : घाटशिला का बुरुडीह डैम झारखंड का लक्षद्वीप कहा जाता है। पर्यटक यहां लक्षद्वीप जैसे माहौल का आनंद उठाते हैं। बुरुडीह की सुंदरता का कोई जोड़ नहीं है। खूबसूरत पहाड़ी और जंगल के बीच बहता नदी का पानी यहां की प्राकृतिक छटा को रमणीक बनाते हैं। बुरुडीह डैम में प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है। यहां पर्यटक मोटर बोट और पैडल बोटिंग का आनंद लेते हैं। यह स्थानीय लोगों के लिए एक पसंदीदा पिकनिक स्पॉट है। शहर की भीड़भाड़ से दूर सुकून से समय बिताने और सूर्यास्त की खूबसूरत तस्वीरें खींचने के लिए यह बेहतरीन जगह है। यू तो



इस ट्रैस्टि स्पॉट में साल भर पर्यटकों का आना जाना लगा रहता है मगर, अक्टूबर से मार्च तक खूब भीड़ होती है। बुरुडीह डैम में

पर्यटक त्योहारों के समय हर साल अक्टूबर के महीने (अश्विन मास) में बुरुडीह डैम के किनारे रविदा मेलाह का आयोजन होता

है। यह मेला लगभग 15 दिनों तक चलता है और स्थानीय संतल समुदाय के साथ-साथ दूर-दूर से आने वाले लोगों के कारण इस

दौरान यहां भारी भीड़ रहती है। इसके अलावा दुर्गा पूजा और दिवाली की छुट्टियों में भी पर्यटकों की संख्या काफी बढ़ जाती है।

गहरी खाई में गिरी वैन, एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत

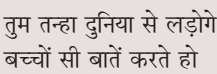
DEHRADUN : उत्तराखंड के चमोली जिले के रुपकुंड मार्ग पर ल्वाणी गांव के समीप जंगल क्षेत्र में एक वैन के शुकुवार की देर रात सड़क से 400-500 मीटर नीचे गहरी खाई में गिरने से उसमें सवार एक परिवार के तीन सदस्यों की मृत्यु हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। पुलिस के मुताबिक, शनिवार सुबह मिली सूचना के बाद पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव अभियान चलाया। पुलिस के अनुसार, दुर्घटनाग्रस्त वाहन में सवार लोग देहरादून में उपचार के दौरान दम तोड़ने वाले अपने परिजन भजन सिंह का शव लेकर आ रहे थे। पुलिस के अनुसार शव एक निजी एंबुलेंस में था जबकि परिजन अपने वाहन से अपने गांव बांक लोहाजंग लौट रहे थे और इसी दौरान उनका वाहन खाई में गिर गया।

झारखंड में स्वास्थ्य विभाग के ब्रांड एंबेसडर होंगे क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने युवा क्रिकेट सनसनी वैभव सूर्यवंशी को राज्य में सम्मानित करने और स्वास्थ्य विभाग का ब्रांड एंबेसडर बनाने की घोषणा की है। मंत्री ने कहा कि कम उम्र में वैभव ने जिस प्रतिभा, आत्मविश्वास और आक्रामक खेल का प्रदर्शन किया है, उसने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। इरफान ने कहा कि वैभव सूर्यवंशी आज देश के करोड़ों युवाओं के लिए प्रेरणा बनकर उभरे हैं। अपनी शाहदाद बल्लेबाजी और निरंतर अच्छे प्रदर्शन के दम पर उन्होंने क्रिकेट जगत में अलग पहचान बनाई है। उनकी उपलब्धियां यह साबित करती हैं कि मेहनत, अनुशासन और समर्पण के बल पर कम उम्र में भी बड़ी सफलता हासिल की जा सकती है।



- हेल्थ मिनिस्टर डॉ. इरफान अंसारी ने की घोषणा- सरकार करेगी सम्मानित
- कम उम्र में असाधारण प्रतिभा का परिचय देते हुए आकर्षित किया दुनिया का ध्यान
- शानदार बल्लेबाजी के दम पर क्रिकेट जगत में बनाई है अलग पहचान



यूट्यूब, अमेजन प्राइम जैसे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध सीआईडी अपने रोमांच, कर्णप्रिय और मधुर गीत-संगीत, भावप्रणव अभिनय और बड़े विजन के लिए जरूर देखी जानी चाहिए।







## BRIEF NEWS

## शॉर्ट सर्किट से मोबाइल टावर में लगी आग



से अचानक धुआं उठता देखा गया। हालांकि आग तेजी से फैलने के कारण करीब एक घंटे तक उस पर पूरी तरह काबू नहीं पाया जा सका। घटना की सूचना तुरंत डायल 112 पुलिस को दी गई। स्थानीय निवासियों रिज राज ने बताया कि प्रारंभिक तौर पर आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है। उन्होंने कहा कि टावर के पास लगी दो महत्वपूर्ण मशीनों पूरी तरह जलकर राख हो गई। ग्रामीणों ने अपने स्तर पर आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन पर्याप्त संसाधन नहीं होने के कारण काफी देर तक आग पर नियंत्रण नहीं हो सका। घटना के बाद मुरहान स्थित तेल टावर से जुड़े लगभग 10 गांवों में नेटवर्क और इंटरनेट सेवा प्रभावित हो गई। कई उपभोक्ताओं को कॉलिंग और डाटा सेवा में परेशानी का सामना करना पड़ा।

94 लीटर से अधिक शराब के साथ तीन गिरफ्तार



**BETIA :** बेतिया पुलिस जिला के लौरिया थाना पुलिस ने शराब के अवैध कारोबार के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी कर 94 लीटर से अधिक शराब बरामद करते हुए तीन कारोबारियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस की इस कार्रवाई से क्षेत्र में शराब कारोबारियों के बीच हड़कंप मच गया है। थानाध्यक्ष इन्द्रजीत पासवान ने शनिवार को बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर सिकन्दरिया पाइप लाइन के समीप छापेमारी की गई, जहां सिकन्दरिया वार्ड संख्या 10 निवासी हीरा सिंह के पुत्र दिनेश सिंह को 84 लीटर देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। इसके बाद बेलवा गांव निवासी गणेश चौधरी के पुत्र चुनचुन चौधरी को बाइक की डिब्की में रखी 7.92 लीटर विदेशी शराब के साथ पकड़ा गया। तलाशी के दौरान उसके पास से एक मोबाइल फोन भी बरामद किया गया। वहीं अगर पंचायत कार्यालय गेट के सामने पुलिस ने लौरिया निवासी ननकी उर्फ राकेश कुमार को 2.91 लीटर विदेशी शराब और एक मोटरसाइकिल के साथ गिरफ्तार किया। पुलिस ने जब्त शराब, बाइक और अन्य सामान को कब्जे में ले लिया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि तीनों आरोपितों के विरुद्ध उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। छापेमारी दल में दरोगा जसमल कुमार, सुधीर कुमार सुग्रीव, अमित कुमार समेत अन्य पुलिसकर्मी शामिल थे।

## सुपौल में जमीन विवाद में खूनी संघर्ष 5 लोग घायल, एक की हालत गंभीर

**SUPAUL :** जिले के निर्मली थाना क्षेत्र अंतर्गत बेला सिंगार मोती पंचायत के धोबीझाई वार्ड संख्या-5 में शनिवार को जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हिंसक झड़प हो गई। मारपीट की इस घटना में पांच लोग घायल हो गए, जिनमें एक व्यक्ति की हालत गंभीर बनी हुई है। जानकारी के अनुसार, घायल मोहम्मद सज्जाद जमीन विवाद से जुड़े मामले में निर्मली अंचल कार्यालय जा रहे थे। आरोप है कि इसी दौरान दूसरे पक्ष के कुछ लोगों ने उनके घर के समीप उन्हें घेर लिया और मारपीट शुरू कर दी। सज्जाद ने शमशादा, मोहम्मद अबीब, इरफान, सुधान कलीम, गुलाद और नौशाद समेत अन्य लोगों पर हमला करने का आरोप लगाया है। घटना में मोहम्मद सज्जाद, मोहम्मद आजाद, मैमून खातून, सोमइया और दिल मोहम्मद



### अस्पताल में इलाजरत घायल

घायल हो गए। स्थानीय लोगों और परिजनों की मदद से सभी घायलों को अनुमंडलीय अस्पताल निर्मला में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज किया गया। अस्पताल ने चिकित्सक डॉ. अरविंद कुमार ने बताया कि मोहम्मद सज्जाद की स्थिति गंभीर होने के कारण उन्हें बेहतर उपचार के लिए दरभंगा के हायर सेंटर रेफर किया गया है।

वहीं, मामले को लेकर निर्मली थाना प्रभारी सियारम मंडल ने बताया कि अब तक किसी भी पक्ष की ओर से थाना में लिखित आवेदन नहीं दिया गया है। आवेदन मिलने के बाद मामले की जांच कर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी। घटना के बाद क्षेत्र में चर्चा का माहौल है, जबकि पुलिस पूरे मामले पर नजर बनाए हुए है।

उसका गुंथशुद्धता का शिकारित दज कराई। पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। सदर थाना के प्रभारी थानाध्यक्ष निसार अहमद ने बताया कि नाबालिग लड़की की तलाश के लिए पुलिस टीम सक्रिय है। आसपास के थानों को भी सूचना दे दी गई है तथा विभिन्न सभायित स्थानों पर खोजबीन की जा रही है। पुलिस ने जल्द ही लड़की का पता लगाने का भरोसा जताया है।

**बिहार की शान** कल तक दिल्ली पहुंच जाएगी स्पेशल रेफ्रिजरेटेड वैन, पैक की गई 200 पेटियां

राष्ट्रपति भवन जा रही शाही लीची, पीएम मोदी भी चखेंगे स्वाद

**PHOTON NEWS MUZAFFARPUR :**  
मुजफ्फरपुर की विश्वप्रसिद्ध शहीद लीची एक बार राष्ट्रपति भवन भेजी जा रही है। अपनी अलग मिठास, स्वाद और खास गुणवत्ता के लिए मशहूर यह लीची शनिवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के लिए दिल्ली रवाना कर दी गई। बताया जा रहा है कि स्पेशल रेफ्रिजरेटेड वैन से भेजी गई लीची 1 जून को दिल्ली पहुंच जाएगी।

विशेष निगरानी में तैयार की गई लीची को इस बार करीब 200 पेटियों में पैक किया गया है, ताकि इसकी ताजगी और स्वाद फीकी न हो।

पतले छिलके, कम बीज, अधिक गूदे और बेहतरीन मिठास के कारण यह लीची खास मानी जाती है। यही वजह है कि हर

साल राष्ट्रपति भवन, प्रधानमंत्री  
आवास और केन्द्रीय मंत्रियों तक  
विशेष और पर भेजा जाता है।  
इस बार राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू और  
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ-  
साथ गृह मंत्री अमित शाह के  
लिए भी लीची भेजी गई है।  
दिल्ली के रायसीना हिल्स स्थित  
राष्ट्रपति भवन और प्रधानमंत्री  
आवास 7 लोक कल्याण मार्ग  
तक भेजी जाने वाली लीची की  
गुणवत्ता बनाए रखने के लिए  
सालभर विशेष देखभाल की  
जाती है। जिन बागानों से यह  
लीची भेजी जाती है, वहां लीची  
अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक  
लगातार निगरानी करते हैं। खेत  
की जुताई, कोड़ाई, सिंचाई, दवा  
का छिड़काव, खाद और उर्वरक  
की मात्रा तक वैज्ञानिक सलाह के  
अनुसार तय की जाती है।  
सिजन शुरू होने के बाद  
जिलाधिकारी के नेतृत्व में एक



लीची की पैकिंग करते कारीगर

## 10 सालों से जा रही एक ही बागान की लीची

मजीफेरपुर के उधमा और बगान की मालीक अलीक को कौड़ी के बागी की लीची 10 पावें से रादफत, ध्वनानीर और गृह मंत्री तक भीजी जाती रही। स्वाद और गुणवत्ता के कारण उनक बगानों की लीची को विशेष रूप से चुना जाता है। अलोककालीया बताते हैं कि मुहुररी, सरैया, भारा और लोली इलाके में उनक लीची के बगान हैं। पिछले दस पावें से इन्ही बगानों से शाही लीची दिल्ली भीजी जाती है। पिछले साल भी करीब 2 हजार लीची भीजी गई थी। लीची को तभी तोड़ा जाता है, जब फल पूरी तरह पक जाता है। इसके बाद लीची को सावधानी से केरने में भरकर पक हाउस लाया जाता है, जहां छटाई, सफाई और विशेष पैकिंग की जाती है।

टीम बनाई जाती है, जो चयनित बागानों की निगरानी करती है। यह टीम सुनिश्चित करती है कि लीची पूरी तरह पक चुकी हो और उसमें शुगर अनुपात सही हो। इसके बाद ही फलों को तोड़कर पैकिंग की जाती है। सीएम की ओर से जा रही भेंट

पेकिंग कार्य से जुड़े अरुण कुमार  
ने बताया कि करीब 200 कार्टन  
तैयार किए गए हैं। कार्टन को  
मिफ्ट पैक की तरह डिजाइन  
किया गया है। उस पर बिहार का  
सोमपुर सम्राट चौधरी का 'सहभ्रम  
भेंट' लिखा गया है। हर बॉक्स  
को इस तरह पैक किया गया है  
कि देखने में आकर्षक लगे और  
फल सुरक्षित भी रहे।

**जीआई टैग से मिली अलग  
पहचान** : मुजफ्फरपुर की शाही  
लीची का जीआई टैग मिल चुका  
है। इससे इसकी राष्ट्रीय और  
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग  
पहचान बनी है। हर साल देश के  
तक हिससों के अलावा विदेश  
तक इसकी मांग रहती है।  
राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और गृह मंत्री  
तक इस लीची का पहुंचना  
मुजफ्फरपुर के किसानों और  
लोगों के लिए गर्व का विषय माना  
जाता है।

जले के डिहरी शहर में नियमों को ताक पर रखकर चल रहे कोचिंग संस्थानों पर शनिवार को शिक्षा विभाग ने बड़ी कार्रवाई की। प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी डॉ. संजय कुमार सिंह के नेतृत्व टीम ने पाली मुहल्ले में छापेमारी कर स्कूल टाइमिंग में चल रहे आधा दर्जन से अधिक कोचिंग संस्थानों को तत्काल बंद करा दिया। कार्रवाई के बाद संचालकों में हड़कंप मच गया। विभाग को लगातार शिकायत मिल रही थी कि पाली मुहल्ले में दर्जनभर से ज्यादा कोचिंग सेंटर अवैध तरीके से संचालित हो रहे हैं। जांच में सामने आया कि कई संस्थानों का रजिस्ट्रेशन तक नहीं है। भीषण गर्मी में एग्जेस्टस की छत के नीचे छात्र-छात्राओं को बैठाकर पढ़ाया जा रहा था। साथ ही मनमाना फीस वसूली की शिकायतें भी मिली थीं। बीईओ डॉ. संजय



### कार्रवाई के दौरान सक्रिय प्रशासनिक पदाधिकार

कुमार सिंह ने बताया कि सभी कोचिंग सेंटर सरकारी गाइडलाइन्स को दरकिनार कर स्कूल समय में ही संचालित किए जा रहे हैं। इससे स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति प्रभावित हो रही थी। छापेमारी के दौरान बिना रजिस्ट्रेशन, अव्यवस्थित भवन और सुरक्षा मानकों की अनदेखी के मामले पकड़े गए। डॉ. सिंह ने कहा कि नियमों के खिलाफ चल

रहे आधा दर्जन से अधिक कोचिंग संस्थानों को बंद कर दिया गया है। पूरी जांच रिपोर्ट वरीय अधिकारियों को भेजी जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि विभागीय निदेशों की अनदेखी करने वाले कोचिंग संचालकों पर आगे भी सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। फिलहाल शिक्षा विभाग की इस कार्रवाई से अन्य कोचिंग संचालकों में भी खलबली है।

# अहिल्याबाई होल्कर भारतीय संस्कृति की अमरज्योति



ललित गर्ग

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'- मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। ज्योति की यात्रा मनुष्य की शाश्वत अभीप्सा है। इस यात्रा का उद्देश्य है, प्रकाश की खोज। प्रकाश उसे मिलता है, जो उसकी खोज करता है। कुछ व्यक्तित्व प्रकाश के स्रोत होते हैं। वे स्वयं प्रकाशित होते हैं और दूसरों को भी निरंतर रोशनी बांटते हैं। अहिल्याबाई ऐसा ही एक लाइटहाउस था यानी प्रकाश-गृह, जिसके चारों ओर रोशनदान थे, खुले वातायन थे।



कभी राजसत्ता को अहंकार का माध्यम नहीं बनने दिया। वे प्रतिदिन खुले दरबार में प्रजा की समस्याएं सुनती थीं। उनके न्याय में न पक्षपात था और न विलंब। यही कारण था कि जनता उन्हें 'लोकमाता' कहकर सम्मान देती थी। अहिल्याबाई का सबसे बड़ा योगदान भारत की सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण में दिखाई देता है। मुगल आक्रमणों और राजनीतिक उथल-पुथल के कारण देश के अनेक मंदिर और तीर्थस्थल नष्ट हो चुके थे। उन्होंने केवल मंदिरों का पुनर्निर्माण नहीं करवाया, बल्कि भारतीय आत्मा को पुनः प्रतिष्ठित किया। काशी विश्वनाथ मंदिर, सोमनाथ मंदिर, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, द्वारका, बद्रीनाथ, केदारनाथ, रामेश्वरम और उज्जैन सहित अनेक तीर्थों में उन्होंने घाट, मंदिर, कुएं और सामाजिक कुतर्तियों का विरोध किया तथा महिलाओं को सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास किया। यह उस समय की दृष्टि से अत्यंत क्रांतिकारी सोच थी। उन्होंने महिलाओं की एक विशेष सैन्य टुकड़ी भी गठित की। यह इस बात का प्रमाण है कि वे नारी को केवल करुणा की प्रतिमा नहीं, बल्कि शक्ति और नेतृत्व की प्रतीक मानती थीं। महेश्वर को राजधानी बनाकर उन्होंने उसे संस्कृति, कला

और उद्योग का केंद्र बनाया। महेश्वरी साड़ियों की परंपरा आज भी उनके दूरदर्शी आर्थिक चिंतन की साक्षी है। उन्होंने स्थानीय उद्योगों को संरक्षण देकर आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का मॉडल प्रस्तुत किया। वर्तमान समय में जब 'लोकल फॉर लोकल' और आत्मनिर्भर भारत की चर्चा हो रही है, तब अहिल्याबाई का मॉडल और अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। अहिल्याबाई का व्यक्तित्व आध्यात्मिकता और व्यवहारिकता का अद्भुत समन्वय था। वे धर्मान्ध्र थीं, किंतु कट्टर नहीं। वे परोपकारी थीं, किंतु दिखावे से दूर। वे शक्तिशाली शासक थीं, किंतु विनम्रता उनकी सबसे बड़ी पहचान थी। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि सत्ता का सर्वोच्च रूप सेवा है। ब्रिटिश इतिहासकार जॉन कीए ने उन्हें 'दार्शनिक रानी' कहा था, जबकि एनी बेसेंट ने उनके शासनकाल को मालवा का 'स्वर्ण युग' बताया। यह केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि उस ऐतिहासिक सत्य की स्वीकृति है कि अहिल्याबाई ने भारतीय शासन परंपरा को नैतिक ऊंचाई प्रदान की। अहिल्याबाई शील, भक्ति, आस्था, शौर्य, शक्ति एवं धर्मान्ध्र के अद्वितीय प्रभाव के कारण ही वे पणम्य हैं, जो परम विदुषी, सनातन धर्म-शासन प्रभाविका, मातृहृदय, कुशल शासक एवं प्रबल धर्मान्ध्र पूज्याप्रवर् हैं। वे हिन्दू धर्म की उच्चतम परम्पराओं, संस्कारों और जीवनमूल्यों से प्रतिबद्ध एक महान विभूति थी, शासक रश्मि थी, सुजन रश्मि थी, नेतृत्व रश्मि थी, विकास रश्मि थी। सनातन धर्म की ध्वजवाहिका थी, एक ऊर्जा थी। उन्होंने ने न केवल कुशल-शासक व्यवस्था के मूल्य मानक

गढ़े, बल्कि सामाजिकता, सेवा एवं परोपकार के नये आयाम भी उद्घाटित किये। आज जब समाज हिंसा, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार और सांस्कृतिक विघटन जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब अहिल्याबाई का जीवन हमारे लिए प्रकाशस्तंभ की तरह है। वे बताती हैं कि नेतृत्व केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज को दिशा देना है। राष्ट्र निर्माण केवल बड़े भाषणों से नहीं, बल्कि सेवा, न्याय और संवेदना से होता है। अहिल्याबाई होलकर का कुतित्व बहुआयामी, दूरदर्शी और लोककल्याणकारी था। वे केवल एक सफल शासिका नहीं, बल्कि जनसेवा, सुशासन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और नारी नेतृत्व की अद्वितीय प्रतिमूर्ति थीं। उन्होंने न्यायपूर्ण एवं संवेदनशील शासन व्यवस्था स्थापित कर मालवा की समृद्धि, शांति और विकास के शिखर पर पहुंचाया। कृषि, व्यापार, जलसंधारण, उद्योग एवं जनसुविधाओं को बढ़ावा दिया, किसानों को संरक्षण दिया तथा सामाजिक समरसता को मजबूत किया। धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के संरक्षण हेतु तीर्थस्थलों का पुनर्निर्माण एवं विकास कराया। नारी सम्मान, विधवा संरक्षण, शिक्षा, लोकसेवा और परोपकार के क्षेत्रों में उनके कार्य अत्यंत प्रेरणास्पद रहे। उनका कुतित्व प्रशासनिक दक्षता, मातृवृत्त संवेदना, धर्मान्ध्रता, साहस, दूरदृष्टि और राष्ट्रनिर्माण की चेतना का अद्वितीय संगम था। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'- मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। ज्योति की यात्रा मनुष्य की शाश्वत अभीप्सा है। इस यात्रा का उद्देश्य है, प्रकाश की खोज। प्रकाश उसे मिलता है, जो उसकी खोज करता है। कुछ व्यक्तित्व प्रकाश के स्रोत होते हैं। वे स्वयं प्रकाशित होते हैं और दूसरों को भी निरंतर रोशनी बांटते हैं। अहिल्याबाई ऐसा ही एक लाइटहाउस था यानी प्रकाश-गृह, जिसके चारों ओर रोशनदान थे, खुले वातायन थे। उनका चिंतन, शासन-व्यवस्था, संस्कृति-प्रेम, संभाषण, आचरण, सृजन, सेवा, परोपकार- ये सब ऐसे खुले वातायन थे, जिन्से निरंतर आलोक प्रस्फुटित होता रहा और पूरी मानवजाति को उपकृत किया। अहिल्याबाई होल्कर भारतीय नारी शक्ति का वह उज्ज्वल अध्याय हैं, जिसमें साहस है, संवेदना है, संस्कृति है और सृजन है। वे इतिहास की स्मृति भर नहीं, वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य की प्रेरणा हैं। उनकी 301वीं जयंती पर उन्हें स्मरण करना तभी सार्थक होगा, जब हम उनके जीवन मूल्यों:कृशुशासन, लोककल्याण, नारी सम्मान, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय संवेदना को अपने राष्ट्रीय जीवन में पुनः प्रतिष्ठित करें। लोकमाता अहिल्याबाई सचमुच भारतीय संस्कृति की वह अमर ज्योति हैं, जो युगों-युगों तक समाज को प्रकाश देती रहेंगी।

## संपादकीय

### इबोला का ‘मृत्यु-काल’

कोरोना वैश्विक महामारी का खौफ, तनाव और मौत का भय आज भी हम महसूस करते हैं, लेकिन इबोला वायरस ने नए ह्रस्वास्थ्य आतंकवादह्म का भाव पैदा कर दिया है। अब इबोला सिर्फ कांगो, युगांडा और दक्षिणी सूडान तक ही सीमित नहीं रहा है, बल्कि 10 अन्य अफ्रीकी देश संक्रमण की चपेट में आ चुके हैं। अकेले कांगो में ही करीब 200 मौतें हो चुकी हैं। मौत का कुल आंकड़ा अभी तक 250 के करीब बताया जा रहा है और करीब 1000 लोग संदिग्ध मरीज बताए जा रहे हैं। ये आंकड़े सरकारी हैं, हकीकत नहीं हैं, क्योंकि संदिग्ध मरीजों में से कितने स्वस्थ हो गए हैं अथवा कितनों की मौत हो चुकी है, इसका कोई भी डाटा सामने नहीं है। इस त्रासद स्थिति से पहले ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इबोला वायरस और संक्रमण को 'वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल' घोषित कर दिया था। भय, तनाव, असहाय स्थितियां इसलिए भी हैं, क्योंकि अभी तक इबोला 'लाइलाज' है। दुनिया में एक भी टीका या गोली अथवा कैप्सूल ऐसा नहीं है, जो इबोला का इलाज कर सके, लिहाजा इस संक्रमण से मौत की संभावनाएं 25-80 फीसदी तक हैं, यह विशेषज्ञ चिकित्सकों का मानना है। लिहाजा हम मौजूदा दौर को आदमी का 'मृत्यु-काल' मानते हैं। हालांकि सीरम इंस्टीट्यूट, पुणे और ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी संयुक्त रूप से इबोला के टीके पर प्रयोग कर रहे हैं। उन्हें भरोसा है कि आगामी 6 माह में एक कारगर टीका विश्व-बाजार में होगा। सीरम और ऑक्सफोर्ड यूनि. ने कोरोना के टीके 'कोविशील्ड' का व्यापक स्तर पर उत्पादन किया, नतीजतन करोड़ों मरीज स्वस्थ हुए और अंततः कोरोना गायब हो सका। उस टीके का आविष्कार ऑक्सफोर्ड ने किया था, लेकिन सीरम ने उसे विश्व स्तर पर उत्पादित किया। बहरहाल अब रूस का भी दावा है कि उसके विशेषज्ञ डॉक्टर और शोधकर्ता भी इबोला के टीके पर काम कर रहे हैं। बहुत जल्द इबोला का टीका बाजार में आ सकता है! इबोला वायरस और संक्रमण के अधिकतर लक्षण एक-समान लगते हैं। तेज बुखार, सिरदर्द, बदन दर्द, त्वचा पर चकत्ते, उल्टी, दस्त, थकान, बेहद कमजोरी, गले में खराश आदि इबोला वायरस के भी शुरूआती लक्षण हैं। आंख, नाक, कान या मल-मूत्र के रास्ते आंतरिक और बाहरी रक्तस्राव होना भी महत्वपूर्ण लक्षण है। इबोला से संक्रमित जानवरों (चमगादड़ या बंदर) का मांस खाने से भी यह संक्रमण फैलता है। इसका संक्रमण इतना भयावह है कि युरोपीय देशों, अमरीका, भारत आदि को 'हाई अलर्ट' घोषित और लागू करना पड़ा है। कनाडा ने तो कुछ समय के लिए वीजा जारी करने पर ही रोक लगा दी है। हालांकि भारत में अभी तक इबोला संक्रमण का एक भी मामला सामने नहीं आया है, लेकिन हवाई अड्डों पर विशेष जांच और निगरानी जारी है। संक्रमण के लक्षण पाए जाने के बाद 'आइसोलेशन' (अलग-थलग रखना) का प्रोटोकॉल भी शुरू कर दिया गया है।

#### चिंतन-मनन

### धर्म का अर्थ

किसी संत के पास एक युवक आया और उसने उनसे धर्म ज्ञान देने की प्रार्थना की। संत ने कहा कि वह उनके साथ कुछ दिन रहे, फिर वे उसे धर्म का सार बताएंगे। युवक उनके आश्रम में रहने लगा। वह संत की हर बात मानता और उनकी सेवा करता। इस तरह कई दिन बीत गए। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि संत उसे धर्म के बारे में कब बताएंगे। वह उनसे धर्म की चर्चा करने के लिए उत्सुक था। वह चाहता था कि उसने शिक्षा प्राप्त कर घर लौट जाए पर संत कुछ खास कह ही नहीं रहे थे। युवक का धैर्य जवाब दे रहा था। एक दिन उसने पृष्ठ ही दिया-मुझे आए इतने दिन हो गए पर अब तक आपने मुझे धर्म का सार नहीं बताया। आखिर मैं कब तक प्रतीक्षा करूँ? संत ने हंसकर कहा-कैसी बात कर रहे हो। तुम जिस दिन से मेरे साथ रह रहे हो उस दिन से मैं तुम्हें धर्म का सार बता रहा हूँ। पर तुम ध्यान ही नहीं दे रहे। युवक ने चौंककर कहा-वो कैसे? संत बोले- जब तुम मेरे लिए पानी लाते हो, मैं उसे सदैव प्रेम से स्वीकार करता हूँ। तुम्हारे प्रति आभार भी प्रकट करता हूँ। जब-जब तुमने मुझे आदरपूर्वक प्रणाम किया, मैंने तुम्हारे साथ नम्रता का व्यवहार किया। यही तो धर्म है जो हमारे दैनंदिन व्यवहार में झलकता है। धर्म कोई पुस्तकीय ज्ञान नहीं है। तुम मेरे और कार्यों पर गौर करो। मैं लोगों से कैसे मिलता हूँ और किस तरह उनकी सहायता करता हूँ। इससे अलग कुछ भी धर्म नहीं है। युवक संत का आशय समझ गया।

## हीटवेव का खतरा और ग्लोबल वार्मिंग की चेतावनी:45 डिग्री के पार तापमान, संकट में जनजीवन



सुनील कुमार महला

आज ग्लोबल वार्मिंग का दौर है और ग्लोबल वार्मिंग के इस दौर में बढ़ती गर्मी अब केवल मौसम का सामान्य बदलाव नहीं रह गई है, बल्कि यह एक गंभीर आपदा का रूप ले चुकी है। कहना गलत नहीं होगा कि लगातार बढ़ता तापमान, हीटवेव और जल संकट लोगों के स्वास्थ्य, कामकाज और दैनिक जीवन पर गहरा असर डाल रहे हैं। खासकर उत्तर भारत इस समय भीषण गर्मी की चपेट में है, जहां कई राज्यों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच चुका है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूँ कि हाल के दिनों में उत्तर प्रदेश का बांदा देश का सबसे गर्म शहर माना गया, जहां तापमान लगभग 48 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। इसके अलावा महाराष्ट्र का ब्रह्मपुरी क्षेत्र भी अत्यधिक गर्मी के कारण चर्चा में रहा, जहां तापमान 47 डिग्री सेल्सियस से अधिक रिकॉर्ड किया गया। राजस्थान के श्रीगंगानगर और बाड़मेर, हरियाणा के सिरसा और रोहतक, तथा उत्तर प्रदेश के प्रयागराज और झांसी जैसे शहर भी भीषण गर्मी

का सामना कर रहे हैं। लगातार बढ़ती गर्मी और हीटवेव का मुख्य कारण ग्लोबल वार्मिंग, कम होती हरियाली और बढ़ता प्रदूषण माना जा रहा है। इससे लोगों के स्वास्थ्य, जल संकट और सामान्य जनजीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। बढ़ती गर्मी के कारण दिन के समय सड़कों पर सन्नाटा दिखाई देने लगा है और आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। मजदूर, किसान, रिश्ता चालक और खुले में काम करने वाले लोग सबसे अधिक परेशान हैं। तेज धूप और गर्म हवाओं के कारण लोगों में डिहाइड्रेशन, चक्कर आना, हीट स्ट्रोक और अन्य बीमारियों का खतरा लगातार बढ़ रहा है। पाठक जानते होंगे कि भारत इस समय दुनिया के सबसे गर्म देशों में शामिल हो गया है। देश की लगभग 76 प्रतिशत आबादी सामान्य से अधिक गर्मी का सामना कर रही है। हर साल बढ़ती गर्मी अब केवल मौसम की समस्या नहीं, बल्कि एक बड़ा सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बनती जा रही है। अस्पतालों में गर्मी से प्रभावित मरीजों की संख्या बढ़ रही है। बच्चों, बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों के लिए यह स्थिति और अधिक खतरनाक बन गई है। इसी गंभीरता को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कैबिनेट बैठक में सभी मंत्रालयों को हीटवेव से लोगों की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ आम नागरिकों से भी मिलकर काम करने की अपील की है, ताकि गर्मी से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके। देश के अधिकांश शहर पहले से ही प्रदूषण, कम हरियाली और खराब शहरी योजना जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। महानगरों में तेजी से बढ़ते कंक्रीट के

जंगल, वाहनों की अधिकता और बढ़ती आबादी के कारण गर्मी और अधिक महसूस होती है। शहरों में पेड़ों की कटाई और खुले स्थानों की कमी ने स्थिति को और गंभीर बना दिया है। गांवों की तुलना में शहरों में तापमान अधिक रिकॉर्ड किया जा रहा है। यही कारण है कि लोग रात के समय भी गर्मी से राहत महसूस नहीं कर पा रहे हैं। ये शहर देश की अर्थव्यवस्था के प्रमुख केंद्र हैं, इसलिए लोगों का बाहर निकलना और काम करना जरूरी होता है, जिसके कारण वे हीटवेव का सबसे ज्यादा प्रभाव झेलते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया में 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की गर्मी से होने वाली मौतों में तेजी से वृद्धि हुई है। वास्तव में, गर्मी का असर केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव जल संकट, खेती और बिजली व्यवस्था पर भी दिखाई दे रहा है। कई क्षेत्रों में जलस्तर लगातार नीचे जा रहा है और लोगों को पीने के पानी के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ रही है। नदियां, तालाब और जल स्रोत सूखते जा रहे हैं। किसानों के लिए भी यह समय बेहद कठिन बनता जा रहा है, क्योंकि अत्यधिक गर्मी फसलों की उत्पादकता को प्रभावित कर रही है। दूसरी ओर बढ़ती गर्मी के कारण बिजली की मांग तेजी से बढ़ रही है, जिससे कई क्षेत्रों में बिजली की कटौती की समस्या भी सामने आ रही है। अब आवश्यकता इस बात की है कि गर्मी को उतनी ही गंभीरता से लिया जाए, जितनी बाढ़, भूकंप या तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं को दी जाती है। हीटवेव को भी राष्ट्रीय आपदा की तरह समझने और उससे निपटने के लिए व्यापक तैयारी करने की जरूरत है। लोगों को

दोपहर के समय अनावश्यक रूप से बाहर निकलने से बचना चाहिए, अधिक पानी पीना चाहिए और जरूरतमंद लोगों, पशु-पक्षियों तथा बुजुर्गों की सहायता करनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने भी लोगों से अपील की है कि वे गर्मी से होने वाली समस्याओं को नजर अंदाज न करें और दूसरों की मदद के लिए आएँ। साइमन स्टील के अनुसार, बढ़ती गर्मी की सबसे बड़ी वजह क्लाइमेट चेंज है। यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में हालात और अधिक कठिन हो सकते हैं। इसलिए सरकारों और समाज को मिलकर दीर्घकालिक तैयारी करनी होगी। शहरों में अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने, जल संरक्षण को बढ़ावा देने, स्वच्छ ऊर्जा अपनाने और प्रदूषण कम करने जैसे कदम बेहद जरूरी हैं। साथ ही सस्ती और निरंतर बिजली उपलब्ध कराना भी आवश्यक है, ताकि लोग अत्यधिक गर्मी से राहत पा सकें। स्थानीय प्रशासन को भी गर्मियों के लिए उतनी ही गंभीर तैयारी करनी चाहिए, जितनी बारिश या सर्दियों के दौरान की जाती है। अंत में, यह स्पष्ट है कि बढ़ती गर्मी अब केवल मौसमी परेशानी नहीं रही, बल्कि मानव जीवन, स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती बन चुकी है। यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में यह संकट और भयावह रूप ले सकता है। इसलिए सरकार, समाज और आम नागरिकों को मिलकर पर्यावरण संरक्षण, हरियाली बढ़ाने और जलवायु परिवर्तन को रोकने की दिशा में गंभीर और सतत प्रयास करने होंगे। तभी आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य दिया जा सकेगा।

## निकोटीन का नया जाल: युवाओं की नसों में घुलता जहर

के भीतर चुपचाप अपना विनाशकारी प्रभाव छोड़ता रहता है। यह कैसर, हृदय रोग, फेफड़ों की बीमारियों, स्ट्रोक और अनेक घातक रोगों को जन्म देकर व्यक्ति को धीरे-धीरे मृत्यु की ओर धकेलता है। इसलिए सिगरेटों के विरुद्ध जागरूकता आज केवल स्वास्थ्य नहीं बल्कि भावी पीढ़ियों के अस्तित्व की लड़ाई बन चुकी है। लोगों को तंबाकू को छोड़ने और इसे कभी हाथ नहीं लगाने के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से ही प्रतिवर्ष विश्वभर में 31 मई को 'विश्व तम्बाकू निषेध दिवस' मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य तम्बाकू सेवन के व्यापक प्रसार और नकारात्मक स्वास्थ्य प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित करना है, जो दुनियाभर में प्रतिवर्ष लाखों मृतों का कारण बनता है। इस वर्ष विश्व तंबाकू निषेध दिवस 'आकर्षण का पदार्पण: निकोटीन और तंबाकू की लत का मुकाबला करना' थीम के साथ मनाया जा रहा है। यह थीम निर्धारित करने समय तंबाकू उद्योग द्वारा युवाओं को टारगेट करते हुए बनाए गए मार्केटिंग के तरीकों की चिंता बढ़ाने वाली प्रवृत्ति की ओर खास ध्यान दिया गया है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार सोशल मीडिया और लाइव स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म इत्यादि के जरिये दुनियाभर में युवा तेजी से तंबाकू उत्पादों के आकर्षण और संपर्क में आ रहे हैं, जो उनके स्वास्थ्य और समाज कल्याण के लिए एक बड़ा खतरा है। दुनियाभर के सर्वेक्षण लगातार दिखा रहे हैं कि अधिकांश देशों में 13-15 वर्ष की आयु के बच्चे तंबाकू और निकोटीन उत्पादों का इस्तेमाल कर रहे हैं। वैसे तो हुक्का, गुटखा, खैनी, जर्दा इत्यादि तमाम तंबाकू उत्पाद स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुंचाते हैं लेकिन इसका सबसे हानिकारक रूप है धूम्रपान, जो हर साल लाखों लोगों की मौत का कारण बनता है। धूम्रपान करने वालों द्वारा सालभर में सात हजार करोड़ से ज्यादा सिगरेटें फूंक दी जाती हैं। हर साल फूंकी जाने वाली इन्हीं सिगरेटों के धुएं से वातावरण भी कितना प्रदूषित होता है,

इसका अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि इस खतरनाक धुएं से करीब 50 टन तांबा, 15 टन शीशा, 11 टन कैडमियम तथा कई अन्य खतरनाक रसायन वातावरण में घुलते हैं। हालांकि सिगरेटें महंगी होने के कारण भारत में बीड़ी का प्रचलन निम्न तथा मध्यमवर्गीय तबके में ज्यादा है और ऐसा अनुमान है कि देश में प्रतिवर्ष सी अरब रुपये मूल्य से भी अधिक की बीड़ियों का सेवन किया जाता है। एक सरकारी अध्ययन के मुताबिक तम्बाकू सेवन से होने वाली बीमारियों के इलाज पर सालभर में करीब 1.04 लाख करोड़ रुपये खर्च हो जाते हैं। तीन दशक पूर्व प्रकाशित अपनी पुरस्कृत पुस्तक 'मौत को खुला आमंत्रण' में मैंने विस्तार से यह बताया है कि धूम्रपान वास्तव में एक ऐसा धीमा जहर है, जो हमारे शरीर में धीरे-धीरे प्राणघातक रोगों को जन्म देता है और व्यक्ति को धीमी गति से मृत्यु शैया पर पहुंचा देता है। दुनियाभर में धूम्रपान के कारण 2019 में 77 लाख लोगों की मौत हुई, जिनमें से 17 लाख मौतें इस्केमिक हार्ट डिजोज के कारण, 16 लाख सीपीओडी के कारण, 13 लाख टर्बिक्यूल, ब्रॉन्कस और फेफड़ों के कैंसर से तथा 10 लाख स्ट्रोक के कारण हुईं। रिपोर्ट के मुताबिक दुनियाभर में होने वाली मौतों में से हर 5 में से 1 पुरुष की मौत धूम्रपान के कारण हो रही है। विभिन्न सर्वेक्षणों के अनुसार माना गया है कि विकसित देशों में चालीस फीसदी से ज्यादा पुरुष और इक्कीस फीसदी से ज्यादा स्त्रियां धूम्रपान करती हैं जबकि विकासशील देशों में सिर्फ आठ फीसदी स्त्रियों को इसकी लत लगी है तथा पुरुषों की संख्या पचास फीसदी से अधिक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार तम्बाकू के सेवन के कारण प्रतिदिन करीब आठ हजार व्यक्ति फेफड़ों के कैंसर के शिकार होकर मर जाते हैं। संगठन का अनुमान है कि यदि दुनियाभर में धूम्रपान की लत ऐसे ही बढ़ती रही तो बहुत जल्द धूम्रपान के कारण पचास करोड़ लोग मारे जा चुके होंगे और अगले तीस वर्षों में केवल गरीब देशों में



ही धूम्रपान से मरने वालों की संख्या दस लाख से बढ़कर सत्तर लाख तक पहुंच जाएगी। संगठन का अनुमान है कि प्रतिवर्ष विश्वभर में आठ हजार से ज्यादा नवजात शिशु धूम्रपान की वजह से असमय काल के ग्रास बन जाते हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि सभी प्रकार के कैंसर में से करीब 40 फीसदी का कारण धूम्रपान ही होता है। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि कैसर, हृदय रोग, सांस की बीमारी, डायलबीज इत्यादि बीमारियों में भी धूम्रपान काफी खतरनाक हो सकता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को धूम्रपान से बचना चाहिए। बहरहाल, धूम्रपान छोड़ने के फायदों के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि धूम्रपान छोड़ने के सिर्फ बीस मिनट के अंदर उच्च रक्तचाप में गिरावट आती है तथा बाहर घंटे के बाद रक्त में कार्बन मोनोक्साइड के विषैले कणों के सार सामान्य हो जाता है। दो से बाहर सप्ताह में फेफड़ों की कार्यक्षमता में तेजी से वृद्धि होती है तथा एक से नौ माह में खांसी तथा श्वसन संबंधी समस्याएं कम हो जाती हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक मनुष्य के फेफड़ों में जाड़ुई क्षमता होती है, जो धूम्रपान से होने वाले कुछ नुकसान को स्वयं ठीक कर देती है और जो व्यक्ति धूम्रपान छोड़ देते हैं, उनकी चालीस फीसदी कोशिकाएं ऐसे लोगों की तरह ही हो जाती हैं, जिन्होंने कभी धूम्रपान नहीं किया।

## Don’t turn RBI into govt’s cash cow

A falling rupee is usually treated as a macroeconomic problem. It raises the cost of imports, worsens inflationary pressures, unsettles investors and dents national pride. But India’s recent experience has produced a curious paradox. The same rupee weakness that creates external stress has also produced a fiscal bonanza for the Union government.The Reserve Bank of India’s defence of the rupee — by selling dollars from its reserves — has yielded large realised profits, which are then transferred to the Centre as surplus. The RBI is thus not merely managing the currency. It is increasingly becoming a fiscal stabiliser, almost a treasurer to the government. This deserves more scrutiny.

The RBI Central Board has now approved a record surplus transfer of Rs 2,86,588 crore to the Union government for FY2025-26. This is higher than the previous record of Rs 2,68,590 crore in FY2024-25, Rs 2,10,874 crore in FY2023-24 and Rs 87,416 crore in FY2022-23. The latest transfer is reportedly backed by robust RBI earnings, including gains from large dollar sales to support the rupee and higher income on foreign assets.

Nearly Rs 2.9 lakh crore is not a rounding-off item. It is close to 8% of the Centre’s revenue receipts. It gives the government fiscal breathing space without raising taxes, cutting expenditure or borrowing more from the market. At a time of elevated crude prices, geopolitical uncertainty and pressure on the fiscal deficit, this is a very useful cushion. But that is exactly why it is worrying. A cushion can quietly become a habit.

The arithmetic is simple. The RBI accumulated dollars over many years when the rupee was much stronger. When it sells those dollars today at a weaker exchange rate, it books a rupee gain. This is not merely a paper gain from revaluing foreign exchange reserves. It is a realised gain from actual dollar sales. Under the economic capital framework, unrealised revaluation gains on gold or foreign exchange are not meant to be distributed. But realised income from forex operations can flow into the RBI’s income and then into its surplus transfer to the government.

This means rupee weakness has produced a fiscal windfall. That is an uncomfortable sentence, but it captures the paradox. The same depreciation that hurts importers, raises the cost of oil, reduces India’s dollar GDP and unsettles foreign investors also boosts RBI profits when dollars are sold.This matters for another reason. If India’s nominal GDP grows by 10% in rupee terms, but the rupee depreciates by more than 10% against the dollar, then India’s GDP in dollar terms barely grows. This is not merely statistical trivia. Global rankings, investor perceptions and geopolitical heft are measured in dollars. A country can grow fast domestically and yet appear stagnant internationally if currency depreciation wipes out the gain. Persistent rupee weakness can therefore become a strategic concern.But that does not mean the rupee must be defended at any cost. India is a current account deficit economy. It imports much more oil, gold, electronics and critical inputs than it exports. It also has a higher inflation rate than the US over the medium term. Some depreciation of the rupee is natural. It can even be desirable. A weaker currency acts as a shock absorber. It protects export competitiveness, discourages non-essential imports and prevents the economy from pretending that external imbalances do not exist.

The danger is not depreciation itself. The danger is disorderly depreciation. That is where the RBI rightly intervenes: to reduce volatility, prevent panic and anchor expectations. But defending a level is different from managing volatility. If the market believes that the RBI will always protect a particular exchange rate, then large importers and dollar borrowers may under-hedge their exposures. An artificially strong rupee subsidises imports, penalises exports and delays adjustment. The eventual correction then becomes more painful.

## Rethinking urban mobility: The case for walkable cities

Building safe streets is necessary for ensuring equitable rights to all citizens

As the nation undertakes a long-awaited Census, can we utilise the decadal exercise for rethinking urban mobility? Census 2011 was the first to gather information on the mode of travel used by workers to reach their workplace. Despite limitations, that data provides the only nationally representative snapshot of commuting patterns in India. The findings are revealing. A majority of Indian workers (58.1% in rural areas and 48.9% in urban ones) commute either on foot or by bicycle, and more than 20% rely on public transport (buses/trains) for their daily commute. By contrast, the share of motorised two-wheelers in urban districts is around 20%, and the share of cars, jeeps or vans remains below 5%.Taken together, this suggests that nearly 70% of Indian workers walk, cycle or use public transport to reach their workplaces. While updated data from the forthcoming census will help refine this understanding, the available evidence offers a compelling insight that most Indians depend on forms of mobility which receive little policy priority and investment.The case for strengthening pedestrian infrastructure is closely tied to the issues of access and equity. According to available data, around 22.53 crore driving licences have been issued to citizens in India, of which only 6% are women. These numbers highlight a major barrier to private mobility. For most citizens, the option of driving a private vehicle doesn’t exist.Apart from being a means of transportation, mobility determines access to employment, education, markets, healthcare and leisure. Expanding equitable mobility options therefore directly contributes to expanding economic and social opportunities.Pedestrian infrastructure is the essential “first and last mile” of public transport systems. Without safe and continuous footpaths, public transport becomes difficult to access. At the same time, walking itself is a legitimate and independent mode of transport. Millions walk to access workplaces, markets, schools and to reach transit stations to reach their daily destinations. Yet in many Indian cities, walking is unsafe, uncomfortable and undignified due to the absence of footpaths or the presence of broken ones, encroachments, poor lighting and lack of maintenance.The State has an important role in ensuring that those without access to private transport, whether due to economic constraints, gender barriers or other social factors, are provided safe, reliable and affordable mobility alternatives, of which walking is an important one.

Current scenario

Despite the centrality of walking in India’s mobility landscape, investment in pedestrian infrastructure remains poorly documented and neglected. Analysing

public spending on pedestrian and cycling infrastructure reveals a striking gap. Apart from scattered references in reports of NITI Aayog, projects undertaken under the Smart Cities Mission and isolated initiatives by some urban local bodies, comprehensive national statistics on investment in pedestrian infrastructure are scarce. Pedestrian infrastructure is largely governed by the Indian Roads Congress guidelines and various urban street design manuals, which are not legally binding. Although public works departments and municipalities maintain technical specifications for footpaths and pedestrian



amenities, the absence of clearly earmarked budgets or dedicated reporting suggests that pedestrian infrastructure isn’t a policy priority. This is in stark contrast with investments made in road infrastructure. While these investments are necessary for supporting commerce, logistics and long-distance mobility, there is a strong case for greater balance in spending, particularly in urban areas where walking remains a dominant mode of travel.

Learning from international practices

Several countries have embedded pedestrian infrastructure within their legal and planning frameworks.In many cities in the US and the UK, “Complete Streets” policies require roads to be designed for all users, including pedestrians. Developers are often required to construct sidewalks at their own cost before receiving occupancy approvals, with planning codes specifying minimum sidewalk widths and accessibility standards.

In the Netherlands, urban planning frameworks require continuous pedestrian networks in neighbourhood plans. In Japan, urban regulations mandate wide sidewalks near transit stations, safe walking routes to schools and pedestrian-only shopping streets. In

Singapore pedestrian infrastructure is treated as an integral component of the transport system, with sheltered walkways and pedestrian links connecting residential areas to transit stations. These examples demonstrate how legal mandates, planning standards and institutional focus can systematically improve walkability.

The way forward

As pedestrian infrastructure is not generally mandated in development approvals, it is frequently treated as an afterthought, not a core component of urban mobility. Many growing cities with expanding infrastructure provide examples of such insensitive planning and lopsided investment. Strengthening pedestrian infrastructure is not about opposing private vehicles. People will continue to own cars or two-wheelers, particularly for longer trips, but well-designed pedestrian infrastructure can make short trips more convenient without the need to use motorized vehicles.

Apart from enabling millions to walk to work, safer and more accessible pedestrian infrastructure is important for addressing the increasing challenges of traffic congestion, air pollution and declining urban liveability. Pedestrian infrastructure moving from the margins of policy discourse to its centre, would involve clearer legal mandates for footpaths in development approvals, national street design standards, and stronger protections for pedestrian right-of-way. In the longer term, there may be merit in considering a dedicated agency to focus on pedestrian infrastructure. The higher fiscal transfers to cities, new grants for urban infrastructure and incentives for stronger municipal finances recommended by the 16th Finance Commission should enable cities to prioritize walkability and invest in strengthening pedestrian infrastructure.The new Census data should endeavour to cover modes of travel, distances travelled, time taken, multimodal travel and vehicle ownership, which will be invaluable for urban mobility analysis and for resource allocation towards balance transport planning.Improving pedestrian infrastructure need not begin with an overwhelming city-wide transformation. A practical starting point would be for cities to identify their major economic and commercial nodes like central business districts, markets, transit hubs, educational clusters, industrial areas and plan a network of footpaths connecting surrounding neighbourhoods to these nodes.

Pedestrian infrastructure as a policy priority can improve local governance resulting from better maintenance, regulating encroachments, improving street lighting and cleanliness — thus restoring dignity and safety to everyday walking experience.

## Drying Haryana: Groundwater degradation threatens soil health

The state’s dependence on water-intensive paddy cultivation remains at the centre of the problem

HARYANA’s groundwater crisis has entered a dangerous new phase. For years, the debate revolved around the rapidly falling water table caused by excessive extraction for the paddy-wheat cycle. Now, a study by Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has revealed an equally alarming reality: barely 32% of the state’s groundwater remains suitable for high-quality irrigation. The problem is no longer just about the quantity of water available underground, but also about its deteriorating quality. Large parts of Haryana are now confronting salinity, sodicity and chemical imbalances that gradually reduce soil fertility and agricultural productivity. In some districts, over-extraction has drained aquifers; in others, canal seepage and poor drainage have produced waterlogging and salt accumulation. Together, these twin crises expose the ecological limits of Haryana’s Green Revolution model.The state’s dependence on water-intensive paddy cultivation remains at the centre



of the problem. Subsidised electricity, assured procurement and MSP incentives continue to encourage indiscriminate groundwater pumping. Farmers cannot be blamed entirely for responding rationally to the economic signals created by policy.

Yet the long-term consequences are becoming increasingly visible beneath the fields themselves. Crop diversification must move from policy rhetoric to economic reality. Farmers require assured procurement and market support for less water-intensive crops such as maize, pulses and oilseeds. Techniques like direct-seeded rice, micro-irrigation and groundwater recharge need wider implementation, while canal systems require better drainage management. Most importantly, groundwater quality mapping must become central to district-level agricultural planning. Haryana’s food security model cannot survive if its soil and aquifers continue to degrade simultaneously. The warning signs are visible. If corrective action continues to lag, the state risks transforming one of India’s most productive agricultural regions into an increasingly water-stressed and chemically damaged landscape.

## How Iran has unified Israel’s regional rivals

➦Anxieties about Iran's missile capabilities, proxy networks and nuclear ambitions have quietly accelerated new patterns of security cooperation across West Asia and the Caucasus

FOR decades, Israel imagined itself as a lonely fortress in a hostile West Asia. Today, however, a quieter reality is emerging: an undeclared regional coalition stretching from the Caucasus to the Gulf, united less by ideology than by a common anxiety about Iran. The alliance is not formal. There are no NATO-style communiqués or public military headquarters. Instead, it operates through intelligence channels, commercial partnerships, drone technology, cyber-security cooperation and discreet political understandings.

The recent confrontation between Israel and Iran revealed glimpses of this hidden architecture.

According to reports in the New York Times, later cited by the Guardian, Israeli officials privately expressed frustration at aspects of the later-stage American negotiations with Tehran and were said to be relying increasingly on "regional allies and their espionage networks surveilling Iran's leadership."The phrase attracted little attention. Yet it points towards one of the least examined geopolitical developments in modern West Asia: Israel's growing network of tacit regional partners.Even as Washington continues indirect contacts with Tehran, regional anxieties about Iran's missile capabilities, proxy networks and nuclear ambitions have quietly accelerated new patterns of security cooperation across West Asia and the Caucasus.

For years, many of these relationships existed in the shadows. In January 2010, alleged Mossad operatives moved through Dubai hotel corridors disguised as tourists and tennis players during the assassination of Hamas commander Mahmoud al-Mabhouh at the Al Bustan Rotana hotel in Dubai. Dubai police later released extensive CCTV footage showing surveillance teams changing wigs, monitoring elevators and tracking the target through hotel lobbies.The Dubai police chief,

Lt Gen Dhahi Khalfan Tamim, declared afterwards that he was "99% if not 100%" certain that Mossad had carried out the operation.

The assassination triggered diplomatic outrage at the time. European governments protested over the use of forged passports, while Gul officials publicly condemned the killing.Yet 16 years later, the geopolitical landscape has changed dramatically.

The covert contacts and intelligence understandings that once operated through hotel rooms, commercial fronts and unofficial intermediaries have increasingly become formalised through the Abraham Accords and expanding regional security cooperation.

Today, Israeli businessmen travel openly to the United Arab Emirates. Cyber-security partnerships are publicly advertised. Defence officials attend the same conferences. Intelligence coordination against Iran is no longer merely whispered about in diplomatic circles. What was once deniable has, in part, become institutionalised.The most intriguing relationship may be with Azerbaijan. The small, oil-rich former Soviet republic shares a long border with Iran and maintains deep security ties with Israel. During a 2016 visit to Baku, Benjamin Netanyahu openly acknowledged the scale of the relationship, declaring: "The contracts signed between Israel and Azerbaijan amount to \$5 billion."The remark was widely reported at the time by Reuters and Israeli media.The Stockholm International Peace Research Institute (SIPRI) has since documented extensive Israeli arms sales to Azerbaijan, including drones and missile systems, which later proved decisive during the Nagorno-Karabakh conflict.

Iranian officials have repeatedly voiced concern about Israeli influence on their northern frontier. In 2021, Iran's Supreme Leader, Ali Khamenei, issued an

unusually pointed warning against the presence of "foreigners" in the region bordering Iran — language widely interpreted as referring to Israel. Tehran's anxieties are heightened by demographics. Millions of ethnic Azeris live inside north-western Iran,

political moderation." The comment was interpreted internationally as a rare public acknowledgment of longstanding informal ties.

The Kurdish regions also offer geography valuable to intelligence services: mountainous borders, smuggling routes and difficult terrain extending into Iran.

Further south, the UAE has emerged as perhaps Israel's most sophisticated regional partner since the Abraham Accords normalised relations in 2020. The UAE's Ambassador to Washington at the time, Yousef Al Otaiba, described the accords as creating "a better path" for the region — diplomatic language that masked rapidly expanding security and technological cooperation. Trade between Israel and the UAE accelerated sharply after normalisation, especially in cyber-security, surveillance systems and artificial intelligence.Even Saudi Arabia, despite lacking formal diplomatic relations with Israel, has quietly moved closer through parallel fears of Iran's missile programme and regional proxy network.The result is a West Asia that would have been almost unimaginable a generation ago. Israel, once regionally isolated, increasingly operates within a loose but expanding ecosystem of states and non-state actors linked less by ideology than by a shared determination to contain Iran.The relationships remain deliberately ambiguous because public opinion across the Arab world still imposes limits on overt alignment with Israel.Yet ambiguity itself has become part of the strategy. In today's West Asia, alliances are often expressed not through treaties, but through cyber cooperation, intelligence exchanges, drone technology and quiet understandings conducted far from public view.



creating fears among Iranian security officials that outside powers could exploit ethnic tensions and separatist sentiment.Further west lies another discreet Israeli partnership: the Kurds. Relations between Israel and Kurdish groups date back decades, particularly in northern Iraq. Israeli officials have periodically expressed support for Kurdish autonomy as a strategic counterweight to hostile regional states.In 2014, Netanyahu publicly stated: "The Kurds are a fighting people who have proven political commitment and

## Non-Food bank credit growth jumps to 15.8% in April 2026; Services, industry lead expansion: RBI

**New Delhi. (Agency)**  
Non-food bank credit growth accelerated to 15.8 per cent year-on-year in the fortnight ended April 30, 2026, compared with 9.8 per cent in the corresponding fortnight of the previous year, according to data released by the Reserve Bank of India (RBI) on Friday.

The data on sectoral deployment of bank credit for April 2026, collected from 41 select scheduled commercial banks (SCBs) accounting for about 95 per cent of total non-food credit by all SCBs, showed broad-based growth across key segments.

Credit to agriculture and allied activities registered a year-on-year growth of 13.7 per cent as on the fortnight ended April 30, 2026, against 9.2 per cent in the corresponding fortnight last year, the RBI said. Credit to industry recorded a y-o-y growth of 15.1 per cent, sharply higher than 7.0 per cent in the corresponding fortnight of the previous year. "While credit to 'Micro and Small' and 'Large' industries grew at an accelerated pace, 'Medium' industries exhibited steady growth on y-o-y basis," the central bank noted.

Among major industries, outstanding credit to 'infrastructure', 'basic metal and metal product', 'all engineering', 'petroleum, coal products and nuclear fuels', and 'chemical and chemical products' marked higher y-o-y growth. However, the RBI said 'construction', 'textiles' and 'rubber, plastic and their products' segments witnessed marginally subdued credit growth.

The services sector led the expansion, with credit growth at 18.6 per cent y-o-y as on April 30, 2026, compared with 10.1 per cent in the corresponding fortnight of the previous year. The growth was supported by robust performance in segments such as 'non-banking financial companies' (NBFCs), 'commercial real estate', 'trade' and 'professional services', the RBI said.

### Infosys CEO Salil Parekh's FY26 pay rises 2.5 pc to Rs 82.6 crore

**BENGALURU. (Agency)**  
Infosys Chief Executive Officer and Managing Director Salil Parekh received total remuneration of Rs 82.6 crore in the financial year 2025-26, marking an increase of about 2.5% from the previous year, according to the company's annual report.

The annual report showed that Parekh's remuneration included a salary of Rs 7.97 crore, retiral and other benefits of Rs 0.53 crore, variable pay of 78.5 crore, stock incentives worth Rs 23.35 crore and perquisites linked to exercised stock units valued at Rs 50.75 crore. His total compensation stood at Rs 82.6 crore for the year. Infosys said Parekh receives remuneration only from Infosys and not from any subsidiary or group company.

The company also disclosed that Parekh exercised 2,72,400 Restricted Stock Units (RSUs) under the 2015 Plan and 64,690 RSUs under the 2019 Plan during FY26. During the year, the board approved several stock-based grants for Parekh. These included 2,30,621 performance-based RSUs linked to business targets, 13,273 performance-based RSUs tied to environmental, social and governance milestones, and 33,183 performance-based RSUs linked to the company's cumulative total shareholder return. He was also granted annual time-based and performance-based RSUs under the company's stock incentive plans.

The annual report noted that Infosys Chairman Nandan Nilekani continued to forgo remuneration for services rendered to the company. Independent directors received commission and sitting fees during the year. Infosys reported revenue of Rs 1.79 lakh crore and net profit of Rs 29,440 crore for FY26, while free cash flow stood at Rs 33,097 crore. The company ended the year with more than 3.28 lakh employees globally.

### Nearly 20,000 MSME applications received under ECLGS

**New Delhi. (Agency)**  
Under the government's Emergency Credit Line Guarantee Scheme (ECLGS), nearly 20,000 applications from micro, small and medium enterprises (MSMEs) have been received for disbursement of Rs 25,000 crore, a senior Finance Ministry official said. "We received around 20,000 applications, all from MSMEs, till this morning, and processed the required amount of Rs 25,000 crore. The scheme has been received very well," the official said, adding that no applications had been received from airlines so far. Under ECLGS 5.0, the government will provide 100% credit guarantee coverage for MSMEs and 90% coverage for non-MSMEs as well as the airline sector. Of the total Rs 25,000 crore allocated under ECLGS 5.0, Rs 5,000 crore has been specifically earmarked for airlines. The scheme provides structured financial relief with a maximum loan limit of Rs 1,000 crore per borrower, along with an additional Rs 500 crore subject to equivalent equity infusion by the borrower. The loans will have a tenure of up to seven years, including a two-year moratorium on repayment, thereby easing short-term liquidity pressures. The Cabinet approved the scheme to address financial stress faced by airlines due to the sharp increase in aviation turbine fuel (ATF) prices, compounded by airspace closures and reduced operations, particularly on international routes, which have led to lower aircraft utilisation and liquidity constraints. Finance Ministry officials also said that 23 policies had been issued under the Bharat Maritime Fund till May 28. "We expect the maritime insurance pool to become bigger and the premiums will further come down," the official added. The \$1.5 billion fund has been established to provide comprehensive maritime coverage for Indian-flagged, India-bound and India-originating vessels.

# CNG prices hiked by Rs 2 per kg in Mumbai, Thane, Navi Mumbai

**This is the second hike in less than a month, following an earlier revision on May 14. The cumulative Rs 4 rise is expected to impact daily commuters, taxi operators and commercial vehicle users who rely heavily on CNG.**

**New Delhi. (Agency)**  
State-run gas distributor Mahanagar Gas Limited (MGL) has increased the price of Compressed Natural Gas (CNG) by Rs 2 per kilogram across the Mumbai Metropolitan Region (MMR), effective immediately. With the latest revision, CNG will now cost 86 per kilogram in

Mumbai, Thane, Navi Mumbai and adjoining areas. This is the second hike in less than a month, following a similar Rs 2 per kilogram increase announced on May 14. The cumulative Rs 4 rise is expected to impact daily commuters, taxi operators and commercial vehicle users who rely heavily on CNG. The YMGL has not yet detailed the reasons behind the latest price revision.

This comes just days after prices in Delhi were increased again by Rs 2 per kg, taking the retail price to Rs 83.09 per kg on May 26. The revision marked the fourth increase within 11 days and the third hike in just nine days, with cumulative CNG prices in the national capital rising by Rs 7 per kg since May 15. The series of revisions began with a Rs 2 per kg increase on May 15, followed by hikes of Rs 1 per kg each

on two separate occasions in the succeeding week. Despite the rise in CNG prices, rates of piped natural gas

disruptions in the Strait of Hormuz, a critical route for global oil shipments, amid heightened tensions involving the US and Iran. The repeated increases are expected to raise operating costs for commuters, transporters and businesses, with analysts warning that higher transportation and logistics expenses could eventually translate into increased prices of essential goods and food items.

Government officials, however, maintain that the price adjustments are necessary to offset rising import costs and ensure uninterrupted fuel supplies during a period of geopolitical uncertainty.

As India imports nearly 85 per cent of its crude oil requirements, domestic fuel prices remain highly vulnerable to fluctuations in international energy markets.



(PNG) for households and domestic LPG cylinders remain unchanged. The fuel price revisions come amid sustained pressure from rising global crude oil prices. Industry experts attribute the surge to growing concerns over potential

## Gold dips 1.36 pc this week over stable dollar, Fed rate hike expectation

**New Delhi. (Agency)**  
Gold prices dipped 1.36 per cent during the week as a stable dollar and stronger-than-expected US inflation data reinforced expectations that the US Federal Reserve may raise interest rates later this year. On Friday, MCX gold June futures dipped 0.59 per cent while MCX silver May futures lost 0.94 per cent. Currently, gold futures stand at Rs 1,56,000, while silver futures at Rs 2,67,000 per kg. The price of 10 grams of 24-carat gold was at Rs 1,56,463 on Friday down from Rs 1,58,622 seen on Monday market opening, according to data published by the India Bullion and Jewellers Association (IBJA). The dollar index rose about 0.10 per cent, while US personal consumption expenditures (PCE) rose 3.8 per cent (year-on-year) in April, the fastest pace since May 2023, bolstering expectations of US Fed rate hikes this year. "Gold and silver continue to attract

selective safe-haven and value-oriented buying near key technical levels, although upside momentum remains closely linked to expectations surrounding US monetary policy, bond yields and the trajectory of the US



dollar," an analyst said. Higher energy prices fuel inflationary pressure increasing the likelihood of Fed tightening, denting gold's appeal as investors gravitate toward yield-

bearing assets. The recent US Fed's 'meeting minutes showed that more officials are now open to the possibility that they may need to hike rates. COMEX Gold is currently trading in the USD 4,570–USD 4,600 range, with weekly price action continuing to reflect a consolidation phase and a cautious undertone, he added. Technically, immediate resistance is placed in the USD 4,600–USD 4,650 region and the USD 4,400–USD 4,350 range continues to serve as a critical support area, market participants said. For MCX Gold, immediate resistance is placed in the Rs 1,60,000 to Rs 1,62,000 range and the Rs 1,54,000–Rs 1,52,000 region continues to act as a critical support base.

## AI-based financial advice a tricky slope, say experts

**BENGALURU. (Agency)**  
The injection and integration of artificial intelligence (AI) into digital spheres of interaction between institutions and the individual have been rapid and steep, allowing little time for law and policy to catch up. Bengaluru-based experts note finance as a sector that is increasingly moving towards AI-based automation, and with the absence of legal frameworks of accountability, consumers are left to their own devices as it were, making them prone to mishaps involving personal and confidential information.

While the loopholes of accountability that are inherent in an interaction between an individual and an AI platform involving private information are obvious, placing the onus on the individual to enact discretion, the situation gets further complicated when an agency offering financial advice uses AI in its operations. "Consumers do not need to fear every AI-driven financial platform, but they should approach them with informed scepticism. AI can assist with financial information, yet decisions involving

savings, debt, insurance, retirement, or investments still require transparency, human accountability, and



independent judgment," said Prof. Madhu Veeraraghavan, pro vice-chancellor for Management, Law, Humanities, and Social Sciences at the Manipal Academy of Higher Education (MAHE). If this was not all, a further complication is introduced by the fact that owing to the aforementioned lack of any ethical standard of procedure or similar framework, it is not uncommon for such platforms to run their customers' queries through layers of AI, without expressly asking for consent. "If

customers are not clear on how much algorithmic systems impact their decisions due to the lack of transparency, they could watch out for some signs: highly standardised replies with minimal context, minimal human interaction, instant automated responses, etcetera," said Remya Tressa Jacob, an assistant professor in the Accounting, Economics and Finance Area department at T A Pai Management Institute (TAPMI).

The lack of a policy or governance with regards to AI also points out to the fact that it is by virtue elusive to such frameworks, which should be a cause for significant concern. Prof. Tuhin S Banerjee, associate dean of the School for Continuing Education and Professional Studies, RV University, explained, "The inherent lack of explainability in deep learning makes it difficult for financial institutions or regulators to understand the reason for the decision thus complicating compliance. Data misuse and unauthorised profiling may happen in trying to use AI for hyper-personalisation."

# Illness, insurance and the cost of timing

**What happens when a chronic illness arrives before health insurance? One Multiple Sclerosis patient's journey highlights the challenges of getting coverage for pre-existing diseases in India.**

**New Delhi. (Agency)**  
In 2019, upon my Multiple Sclerosis diagnosis, I was admitted to the hospital for five days. At discharge, I received a bill of Rs 2 lakh, an amount more than double my monthly income at the time. My corporate insurance covered 90 percent of it and I paid the rest. I left feeling fortunate, even reassured.

It took me a year to understand how fragile that reassurance was. As mobility challenges set in, I had to step away from my career. With that, I lost the corporate insurance I had relied on.

Not taking personal health insurance was one of my biggest mistakes. One I cannot undo because health insurance is typically meant to be purchased before illness. Once a condition is diagnosed, it is classified as pre-existing and is often

excluded for life or is heavily restricted. Even relatively manageable conditions are treated with caution. For instance, thyroid disorders often come with waiting periods of up to three years before any claims can be made, despite continuous premium payments. If that is the case for common conditions, the exclusion of complex, lifelong illnesses like MS is inevitable. I have been covered under a family health insurance plan since 2004, with premiums paid consistently for over 20 years.

However, a request to increase the sum insured after my diagnosis, in order to accommodate my condition was denied on the grounds that it was considered a pre-existing condition, leaving no room to adjust coverage when needed the most. THE HIGH COST OF LIVING WITH MS

The disease-modifying therapy I rely on for MS- Ocrevus (ocrelizumab) costs approximately Rs 2.81 lakh per infusion, excluding hospital and related expenses. In total, each cycle comes close to Rs 3.5 lakh. Administered every six months, this brings the annual cost to nearly Rs 7 lakh. This amount is about twice the annual income of a middle-class individual in urban India.

This reveals who health insurance really serves. In principle, insurance exists to protect against uncertainty. In practice, it often benefits those who secured coverage before illness struck. For those who did not anticipate a chronic condition early enough, meaningful coverage remains out



of reach. **A SYSTEM THAT REWARDS TIMING, NOT NEED**  
I often find myself asking a simple question: why didn't I know enough about health insurance to take it in time? The answer, I have come to realise, is not just personal—it is cultural. Health insurance is rarely part of everyday conversation. It is not something we discuss openly with friends or within families, nor is it meaningfully

taught in schools. I do not remember being told, at any stage, about its importance. Like many others, I learnt about it only after I needed it. Even now, most people I know continue to rely entirely on corporate insurance, assuming it will be enough. Few expect that illness could also mean losing their financial security and perhaps, no one should have to live with that fear. What has been harder to process is the shift in response after my diagnosis. Before, no one spoke about insurance. After my diagnosis, it became a question of personal responsibility. Why didn't you plan better? I was asked. The same advice that was never offered earlier was now delivered with certainty.

**WHY MANY INDIANS LEARN ABOUT INSURANCE TOO LATE**  
I accept that I did not plan better. But the larger question remains: why is this something we are expected to learn only in hindsight? If awareness is truly everywhere, as we are often told, why does it so often arrive only after the damage is done?

The truth is we do not talk about health insurance until it is too late. Preparedness is treated as individual responsibility but the knowledge required to prepare is never meaningfully shared.



Hopes of an agreement had risen on Thursday after US officials voiced optimism about the diplomatic progress.

NEWS BOX

IPL 2026: Kumar Sangakkara drops Sam Curran injury truth bomb after RR bow out



CHENNAI. (Agency)

Rajasthan Royals head coach Kumar Sangakkara has questioned Sam Curran's absence from IPL 2026 after the England all-rounder returned to action for Surrey in the Vitality Blast, despite the franchise being informed that he had suffered a season-ending injury.Speaking after Rajasthan Royals' exit in Qualifier 2, Sangakkara said it was disappointing to see Curran return to action in England after the franchise had been informed that the all-rounder would miss the entire season due to injury.We were told that Sam Curran had a season-ending injury, but I think I saw him play two or three games for Surrey. That was disappointing because we would have loved to have had him here with us," Sangakkara told reporters.Curran was signed by Rajasthan Royals for Rs 2.40 crore but withdrew before the start of the season because of a groin injury. The franchise subsequently brought in Sri Lanka all-rounder Dasun Shanaka as his replacement.

Sangakkara said the Roals had accepted the situation when they were informed of the injury and praised the squad for the way it responded despite losing a player of Curran's calibre."Having brought in Dasun Shanaka as a replacement after being informed early, I think the team and everyone involved should be extremely proud of what they've achieved," he said.The former Sri Lanka captain also backed the BCCI's stance on player withdrawals and injuries, saying clear rules were necessary to protect the interests of franchises"A proper, tight policy around that is always a requirement, and the BCCI has a strict policy on it. Injuries are part of the game, and if it's a serious, season-ending injury, of course we understand," Sangakkara said.Curran's withdrawal came after a groin problem that had troubled him during England's T20 World Cup campaign. Speaking after pulling out of the IPL, the 27-year-old had said scans revealed enough damage to require an extended period of rehabilitation."It's an injury that I've kind of been battling with a little bit. It has gradually got fractionally worse. I went for a couple of scans, and it showed reasonable damage, so I had to make the tough decision.

Delayed entry, weight change: Vinesh Phogat clears last-minute hurdles for Asian Games trials

Vinesh Phogat was finally cleared to compete in the Asian Games 53kg trials on Saturday after days of legal and administrative confusion involving the Wrestling Federation of India.

New Delhi. (Agency)

Even after the Supreme Court cleared her participation, Vinesh Phogat faced last-minute hurdles ahead of the Asian Games selection trials on Saturday, May 30. However, the wrestler was eventually allowed to compete in the 53kg category after days of uncertainty and legal wrangling involving the Wrestling Federation of India (WFI). The federation had approached the Supreme Court challenging a Delhi High Court order that directed it to permit Phogat's participation in the trials.Phogat had to fight hard to secure her place in the selection trials after the WFI attempted to block her participation. The federation had moved the Supreme Court challenging a Delhi High Court order that directed it to allow Phogat to compete in the trials. However, she eventually had the final word after winning the legal battle.

The uncertainty continued at the venue as Vinesh arrived at the Indira Gandhi Stadium at 6:30 am but was made to wait until around 8:20 am for her weigh-in. Notably, the three-time Olympian had initially planned her comeback in the 57kg category at the Senior Open Ranking Tournament in Gonda before being barred from competing by the WFI. Phogat had turned up at the event in Uttar Pradesh only to return without competing.

WHAT'S THE OFFICIAL WORD?

The Wrestling Federation of India (WFI), meanwhile, issued an official statement saying the weigh-in for all categories, including the women's 53kg division, was conducted as per schedule at the Indira Gandhi Stadium, with Vinesh Phogat among those who completed the required formalities and were cleared to compete in the selection trials. However, the statement did not address the confusion surrounding her weight category."The weigh-in for all weight categories, including the Women's 53kg category, was conducted at the Indira Gandhi Stadium, New Delhi, as per the approved schedule for the Asian Games selection trials," the WFI said in a statement."All eligible wrestlers, including Ms. Vinesh Phogat, reported for the weigh-in and completed the requisite formalities."Accordingly, all eligible

Federation of India (WFI) over alleged procedural and disciplinary violations, including a missed dope test last year.The WFI later approached the Supreme Court to challenge the High Court order, but the top court declined to stay her participation. The Delhi High Court also directed the Sports Ministry to appoint observers for the trials, while criticising the WFI's attempt to block Phogat from competing.

WHO ARE THE OBSERVERS OF VINESH PHOGAT'S TRIAL?

When Vinesh Phogat competes in the high-profile women's wrestling Asian Games trials, former footballer Aditi Chauhan and Olympic gold-medallist hockey captain M M Somaiya will serve as observers from the Indian Olympic Association (IOA) and the Sports Ministry.Chauhan, a pioneering former goalkeeper who played professionally in the UK with West Ham United, is currently the Programme Officer for the IOA's Athlete Commission (Safeguarding & National Olympic Academy), a role she took up earlier this year. She represented India 57 times before retiring from international football.

Play of the Day: Gill, Sudharsan and a reminder that cricket's basics never go out of fashion

New Delhi. (Agency)

The IPL has spent years redefining what batting can look like.Every season brings with it a fresh innovation. Batters shuffle across their stumps to lap 145kph fast bowlers over fine leg. Yorkers disappear behind the wicketkeeper. Reverse scoops and ramps, once considered novelty shots, have become part of the everyday vocabulary of T20 cricket. The format rewards audacity, celebrates invention and often convinces players that there is always a newer, smarter and more adventurous way to score runs. That is what made Gujarat Titans' chase against Rajasthan Royals in Qualifier 2 so fascinating.In a match featuring one of the most gifted teenage talents the game has seen in years and a target in excess of 200, the defining performance came not from innovation but from execution. It came from two batters who continue to trust cricket's oldest principles and execute them better than most.Shubman Gill and Sai

Sudharsan did not chase 215 with a barrage of unconventional strokes. They did not attempt to overwhelm Rajasthan through recklessness. Instead, they produced a

batting display built on timing, placement, footwork and shot selection, reminding everyone that the basics remain just as effective in 2026 as they were decades ago. By the end of the night, Gujarat had secured a commanding seven-wicket victory, booked a place in their third IPL final in five seasons and completed the highest successful chase in the franchise's history. Gill had produced

a sublime 104 off 53 balls, Sudharsan had contributed a fluent 58 off 32, and together they had added 167 runs in just 77 deliveries in a partnership that effectively ended the contest before Rajasthan realised it was slipping away.The chase, however, began long before Gill and Sudharsan walked out to bat.

Earlier in the evening, Rajasthan Royals had been propelled by another remarkable innings from Vaibhav Sooryavanshi. The 15-year-old prodigy once again played with a freedom and confidence that belied his age, smashing a brilliantly paced 96 off 47 deliveries. His innings was packed with astonishing strokes and fearless intent, helping Rajasthan post 214 for 6 after electing to bat first on a used New Chandigarh surface.At various points during Sooryavanshi's innings, it appeared as though Rajasthan were heading towards a total that would place enormous pressure on Gujarat. Yet inside the Titans camp, there was little sign of panic.

Vaibhav Sooryavanshi more than ready: Sangakkara backs RR starboy for India call-up

New Delhi. (Agency)

Rajasthan Royals head coach Kumar Sangakkara believes Vaibhav Sooryavanshi is more than ready for an India debut. The teenage sensation enjoyed a dream IPL 2026 campaign, finishing as the Orange Cap holder with 776 runs from 16 matches at an average of 48.50 and a staggering strike rate of 237.30, including one century and five fifties.Amid his remarkable season, Sooryavanshi also earned a call-up to the India A squad for next month's tour of Sri Lanka. On Friday, the 15-year-old smashed 96 off 47 balls, but his valiant effort went in vain as the Royals failed to reach the final, losing to Gujarat Titans in Qualifier 2.Backing Sooryavanshi to soon earn his senior India cap, Sangakkara praised the youngster's maturity and composure, saying he has shown a strong sense of responsibility and impressive game awareness throughout the tournament.You never really know if anyone is ready until they play. But with everything he has shown against some of the best bowlers in the world, I think he's more than ready to take on any challenge that you throw at him. I'm sure he'll get that call-up very, very soon," Sangakkara said in the post-match press conference."He has batted with a lot of maturity and shouldered the responsibility of that opening partnership really well for us this season.

'NEVER A GOOD SIGHT'

Sooryavanshi also faced a major challenge against the Titans when he was struck on the helmet by a sharp bouncer from Kagiso Rabada. However, the Royals opener showed remarkable courage, quickly regaining his composure after undergoing a mandatory medical assessment before continuing his innings.And yes, any batter getting hit is scary. I've seen a lot of people get hit, and it's never a good sight. But I'm glad he's OK," Sangakkara added.Sooryavanshi may have fallen just four runs short of a century in Qualifier 2, but the 15-year-old still had plenty to celebrate. During his 96-run knock, he became the fastest batter to reach 1,000 IPL runs in terms of balls faced, surpassing Andre Russell's previous record.

Arsene Wenger built the dream, can Arteta complete it with Champions League glory?



NEW DELHI. (Agency)

There is a unique pressure that comes with chasing ghosts. For years, every Arsenal manager lived under the towering shadow of Arsene Wenger, the man who shaped the club's modern identity.

Now, as Arsenal prepares for the Champions League final against Paris Saint-Germain, the comparison has shifted dramatically.

Mikel Arteta has already ended Arsenal's 22-year wait for a Premier League title. One more victory could deliver an unprecedented European double and spark an uncomfortable question: if Arteta wins the Champions League, does he surpass Wenger's legacy?The Perfect Run vs The Unpredictable Challenger

Arsenal has stormed through Europe, reaching the final without losing a single game, including all eight group-stage games. A possible European 'Invincible' season is on card.On the other hand, PSG's path has been far messier, with Luis Enrique's side enduring inconsistency in the league stage before battling their way into another final.

That contrast has led some fans to argue that it would be a bottle job if Arsenal fails to lift the trophy. Former India international Robin Singh, however, disagrees entirely.

"I don't think it's going to be a bottle job," Robin said in an exclusive inte"The physical and emotional toll of winning the Premier League — the best league — from being called 'nearly there' for so many years has now found fruition. The pressure is off their back because they've won the league."

Robin believes that from here on whatever Arteta achieves will be considered an achievement. "For him now, it's about continuing that form, and I think more than a bottle job, it'll be: 'We haven't done it for 20 years. This is about making history.'"

Writing History, Not Replacing It

Football debates often reduce legacy to a simple hierarchy. But Wenger's influence extends far beyond silverware.d long-term vision

UEFA Champions League: Arsenal face PSG with European glory and history on the line

Arsenal meet holders PSG in the Champions League final in Budapest after dominant but contrasting runs. A first European crown for Arsenal or a rare successful defence for PSG would make this a defining final.

NEW DELHI. (Agency)

As European club football reaches its crescendo at Budapest's Puskas Arna, Arsenal and PSG stand one match away from immortality.Fresh from ending a 22-year wait for the Premier League title, Mikel Arteta's Arsenal are chasing the one trophy that has long eluded the club — the

UEFA Champions League. Standing in their way are defending champions PSG, led by Luis Enrique, who are aiming to

become the first team since Real Madrid to successfully retain the title.Arsenal have been dominant in Europe this season, arriving in Budapest unbeaten and boasting one of the competition's best defensive records. PSG, meanwhile, once again conquered French football by winning a fifth straight Ligue 1 title and continue to impress with Enrique's possession-based, high-intensity style.

THE ROAD TO THE FINAL

Arsenal's run to their first Champions League final in 20 years has been built on consistency and defensive solidity. The Gunners topped the league phase after winning all eight matches whilThey followed that by defeating Bayer Leverkusen 3-1 on aggregate in the Round of 16, edging Sporting CP 1-0 in the quarter-finals, and overcoming Atletico Madrid 2-1 across two legs in the semi-finals.

PSG's journey has been far more dramatic. After finishing 11th in the league phase and entering the play-offs, they navigated a series of difficult knockout ties.

The French champions beat Monaco 5-4 on aggregate before dismantling Chelsea 8-2 in the Round of 16. Liverpool were swept aside 4-0 in the quarter-finals, while PSG survived a thrilling 6-5 aggregate semi-final victory over Bayern Munich to book their place in Budapest.e conceding only four goals.

The flying Sikh: How Gurindervir Singh took back the title of fastest Indian alive from Animesh Kujur

Gurindervir Singh and Animesh Kujur are two of the fastest men in India. The battle between the two is rapidly taking sprinting to new heights in the country.

Las Vegas. (Agency)

Punjab's Gurindervir Singh rose to national prominence in May 2026, when he ran the fastest 100m sprint ever recorded by an Indian man. Racing alongside Animesh Kujur, Gurindervir posted a time of 10.09, bettering Animesh's previously held national record by a considerable margin.What was perhaps more fascinating was the fact that the national record was traded three times in the space of 24 hours. First, Guri broke Animesh's 10.18, set last year, by 0.01 seconds in the heats. Animesh rose up to the

occasion soon enough and bettered both Guri and his own timing by registering 10.15..In the final showdown between the two, Guri raced ahead and posted a staggering time of 10.09, becoming the first-ever Indian to dip under 10.10, something that seemed like a distant dream even a few years ago.But that is not the story that we are telling today. Today's story is about how Guri, once nearly defeated by illness, found himself back to be the best again.

After winning the 2026 Fed Cup, Gurindervir chucked his spikes hard at the ground, only to pick them up and kiss them moments later. The raw emotions came from a man who had nearly lost his career in 2022.

THE UNMAKING OF INDIA'S FASTEST MAN

Training in National Institute of Sports Patiala, Gurindervir fell sick, which left his stomach lining thinned. Unable to absorb nutrients properly, Gurindervir lost that year to sickness and spent a large part of 2023 recovering from it.His previous best of 10.27

had come back in 2021, when he was still only 21 years old. But after the illness,

Championships, he was still not running as fast as he once had.The struggle was not just physical. Training at an elite level without seeing the same response from your body can weigh heavily on an athlete. When Gurindervir joined the Reliance Foundation, after the Fed Cup 2024, the intensity of the programme initially left him overwhelmed.

Speaking to ESPN last year, Gurindervir admitted that he went into the National Games with negative thoughts in his head, unsure if he was adapting properly to the level of training around him.After a hard couple of years, Gurindervir got back to his potential again. He became India's fastest man in March 2025, posting a timing of 10.20 in the Indian Grand Prix in Bengaluru. That rush of becoming India's fastest man alive, Guri perhaps did not handle very well.

"I think his mind wasn't conditioned for what happened after that national record, it just went a bit crazy, and he just wasn't ready for it. But he's learnt a lot from that," Guri's coach James Hillier told IndiaToday.in an interview.



# Kiara Advani

## Was Asked Not To Say 'Hi, Hello' On Toxic Set, Was Told 'I Don't Want Pleasantries'

Kiara Advani will soon be seen in Toxic: A Fairy Tale For Grown-Ups. In a recent interview, the actress opened up about working on the project and revealed how the director Geetu Mohandas had asked her not to say 'hi, hello' to anybody on sets. This was because the filmmaker wanted the Bollywood star to be in her character's zone during the shoot.

"Geetu is like, okay, tomorrow when you come on set, I want you to be... and I'm a person when I walk on set I'm always like, 'Hi, what's up, good morning', I'm that person. And she's like, 'I don't want pleasantries, I want you to come in that zone, no hi hello, not your team, nobody, just be in a zone today'," Kiara told Bombay Times.

The Bollywood actress also admitted that working on the film was 'challenging' because she also had to shoot in the Kannada language. "Working in Kannada, I think I would say Toxic has been challenging because it's for the first time that we shot in both English and Kannada. We would do the same scene. So this shot was an English shot first till we got the take right.



Then we do the Kannada take, because you're, at least for someone like me, Kannada not being my language, mugging up my dialogues literally the night before," she said.

For the unversed, Toxic was shot in English and Kannada but will be released in several other languages, including Hindi. However, Kiara also explained that working in the Kannada film industry was not very different from how she is used to working on Hindi films. "I think eventually there may be slight cultural differences, but I feel eventually at the core we're all Indians, so there's a similarity, there's a familiarity.

Even the style of working sometimes, the bigger the stars and backup, which is great over there. But apart from that, I feel I've had a fairly similar experience with working in Hindi and in Telugu language," she shared.

Backed by KVN Productions and Monster Mind Creations, Toxic: A Fairy Tale for Grown-Ups also stars Yash, Nayanthara, Huma Qureshi, Rukmini Vasanth and Tara Sutaria in pivotal roles. Toxic was supposed to hit theatres on June 4, 2026. However, it has once again been postponed. The film's new release date has not been announced as of now.



# Malaika Arora

## On How She Protects Her Joy Amid Public Scrutiny: 'Internet Is Loud, But Not Always Wise'

Malaika Arora has been under constant scrutiny since the start of her career. Apart from her professional choices, she also frequently makes headlines for her personal life, especially her romantic relationships.

Recently, Malaika shared that she has learnt how to protect her inner joy. She also reflected on the things that spark joy for her. "I protect it (her inner joy) by remembering that the internet is loud, but it is not always wise. There's a difference. Over the years, I've realised that if you keep handing your peace over to public opinion, you'll never feel settled within yourself," Malaika Arora told Hindustan Times.

"I've learned to create boundaries. I don't consume everything that's said about me. I don't internalise every opinion. I lean on real life, my work, my loved ones, my routines, the things that actually nourish me.

That's what keeps me grounded," she added. Malaika said, "And honestly, with age comes perspective.

You stop reacting to every passing noise. You understand that criticism often says more about the person throwing it than the person receiving it. My joy today comes from being anchored in who I am... It's personal, it's protected, and it's not up for public debate."

"I think the thing I'm most joyful about today is my ease with myself. Earlier, like many women, I think I spent a lot of time wondering if I was being too much, too outspoken, too visible, too ambitious, too glamorous, too independent," she shared. "With time, you realise that the very things people want to shrink in you are often your strengths. Today, I genuinely enjoy being who I am without apologising for it. At this stage of my life, joy comes from not constantly editing yourself to make other people comfortable. I've earned that comfort in my own skin," she concluded.



### Samay Raina Shares Glimpse From India's Got Latent Sets, Says 'Uski Bhi Shooting Chal Rahi Hai'



Comedian Samay Raina has sparked fresh speculation about the return of his controversial show India's Got Latent. Nearly a year after the show found itself at the centre of a major controversy over alleged vulgar remarks made during one of its episodes, Samay hinted that the series may be back in production by sharing a behind-the-scenes glimpse from its shoot.

The update came on Thursday, when Samay first took to Instagram Stories to announce the return of his COB chess tournament for longtime fans.

#### Samay Raina Hints At India's Got Latent Return

Sharing an update about his chess tournament, Samay wrote, "Organising my favourite chess tournament for old times' sake! I still love you chat." He also revealed the list of players, which included Anirban Dasgupta, Vaibhav Sethia, Joel Dsouza, Tracy Alison, Prakhari Gupta, Vivek Desai and Balraj Ghai. In another Instagram Story, Samay cheekily addressed his Latent fanbase by sharing a clip from his stand-up special Samay Raina: Still Alive. Along with the clip, he wrote, "Latent fans in my dms." The video featured his comic line, "Yeh chess khel raha hai yaha pe?"

However, it was his next Story that grabbed the most attention. Samay shared a behind-the-scenes picture from what appeared to be the shoot of India's Got Latent. While he blurred the faces of the guests to keep their identities under wraps, he captioned the image, "Uski bhi shooting chal rahi hai dostoo."

The picture showed Samay holding a microphone, while comedian Balraj Ghai was seen standing behind him. The post has now led many fans to believe that India's Got Latent is officially back in production.

### Pooja Bhatt Recalls 'Spark' With Aamir Khan During Dil Hai Ke Manta Nahin: 'It Never Bloomed'



Aamir Khan's reputation as a "perfectionist" on film sets began taking shape quite early in his career, and according to Pooja Bhatt, Dil Hai Ke Manta Nahin was one of the films where that side of him was already visible. The 1991 romantic drama, directed by Mahesh Bhatt, starred Aamir and Pooja in lead roles and went on to become one of the most loved films of its time. In a recent interview, Pooja revisited the film's shoot, her equation with Aamir and the "spark" they shared on camera.

#### Pooja Bhatt Recalls Working With Aamir Khan In Dil Hai Ke Manta Nahin

Speaking to Vicky Lalwani, Pooja said Aamir was deeply involved in the filmmaking process even back then. She recalled how he would rehearse extensively and question everything that did not feel right for the character.

She said, "He is somebody who rehearses. He is somebody who is... Well, some people would say intrusive, some people would say extremely interested in every aspect of the film. So he would question, 'Why are you wearing heels that are so big? That's not the character.' But I learnt a lot from him. His precision, for example, as an actor, he is a precise actor."

Pooja also revealed an interesting trivia about Aamir's famous cap from the film. According to her, the cap was Aamir's own addition to the character and had originally belonged to his nephew, Imran Khan. She said, "He was wrong about a lot of other things but he was right about one thing which was that cap. That cap was his addition to the film. He took it from his nephew, Imran, I think, and he brought it, and we said, 'Oh my god, you can't wear this, it's a child's cap.' He said, 'That's exactly where I got it from. I got it from my nephew.' And we were like, 'You can't wear this' and we were making fun of this, and that cap became a rage, it was sold on every street corner."

#### Pooja Bhatt Says She And Aamir Were Like Tom And Jerry

Looking back at their off-screen friendship, Pooja said she and Aamir would constantly tease each other during the shoot. She shared, "He is not all-knowing and correct always, and we used to pull each other's leg a lot."